आदरणीय परम गुरु जी एवं गुरु जी के परम गुरु जी को कोटि-कोटि नमन,

मैं पिछले 2 सालों से एक अलग तरह के कार्य में लगकर वेद के सहायक "पुराण ग्रन्थ" पर मंथन किया जिससे मेरे अंदर उन समस्त सवालों का जवाब दे दिया जो मुझे आज के विज्ञान नहीं बता पा रहा था उसी "पुराण ग्रन्थ" का एक अंग आपके सामने रख रहा हूँ, यह मैं आपको इसलिए कह रहा हूँ की मैं आपसे कहा था की मैं आज के विज्ञान को बदल दूंगा वह सही में बदला जा सकता है

मैंने जो भी ज्ञान "पुराण ग्रन्थ" के द्वारा प्राप्त किया है वह सभी प्रमाण के द्वारा प्रशारित कर रहा हूँ मैं यह विश्वास दिलाता हूँ की जो बाते माने आप से कहा था की "बिजली से बिजली" बनाई जा सकती है वह निश्चित ही बनती है इसमे कोई संशय नहीं, मुझे अभी तक वह धन संग्रह नहीं हो सका है जिसके द्वारा इस काम को सिद्ध कर सकु, आप विस्वास करे जो मैंने कहा है वह जरूर करूंगा जब मेरे पास वह धन ज्यो ही संग्रह हो जाएगा, उसके बाद कुछ ही समय में इस कार्य को सिद्ध कर दूंगा

पुराण को समझने के लिए 6 चीजों का ज्ञान होना अति आवश्यक है इसके बिना रहस्मय पुराण ग्रन्थ को नहीं समझ सकते

१) शिक्षा
२) कल्प
३) व्याकरण
४) निरुक्त
५) ज्योतिष
६) छन्द

आपके सामने "कल्प" नाम की संख्या का विस्तार से वर्णन करने जा रहा हूँ और संक्षेप में पृथ्वी के भूगोल के बारे में भी जानकारी है

जैसे पृथ्वी का मध्य कहाँ है ? ब्रह्माण्ड का मध्य कहा है ? देवता कौन है ? पृथ्वी की आयु कितनी है ? एलियन कौन है ? बरमूडा ट्रैंगल का क्या रहस्य है ?

ॐ नमो भगवते
वासुदेवाय नम

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

यह जगत विष्णु जी से उतप्पन हुआ है, उन्ही में स्थित है, वे ही इसकी स्थिती और लय के कर्ता है तथा यह जगत भी वे ही है, यह विष्णु जी कहाँ से आये ? उनकी उतपत्ती कैसे हुआ ? यह कोई नहीं जनता, उन्होंने ही इस मायामय संसार की रचना सिर्फ लीलामात्र के लिए की है

विष्णु जी की वास्तविक रूप नाग है, यह नाग ही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर है जैसे एक ही व्यक्ति के तीन प्रतिबिम्भ,जैसे एक किसान खेत को बनाता और बीज डालता है उसके बाद खेत की रक्षा करता है उसके बाद जब फसल पक जाती है उसे काट लेते है

इस प्रक्रिया में एक किसान पहले जब खेत बनाया और बीज बोया उस समय वह ब्रह्मा का कार्य कर रहा था, जब वह खेतों के फसल की रक्षा में लगा था उस समय वह विष्णु के रूप में था जब वह फसल काटा उस समय वह शिव रूप था इसी तरह यह ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों एक ही है

ब्रह्मा विष्णु और शिव जिनका काम उतपति, स्थिती और संहार के कारण है, उन विकार रहित शुद्ध, अविनासी, परमात्मा, सर्वदा एकरस, सर्ववीजायी, भगवान विष्णु को नमस्कार है, जो एक होकर भी नाना रूप वाले स्थूल सूक्ष्म, अव्यक्त एवं व्यक्त रूप में सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड से लेकर पृथ्वी तक अपने आप को स्थित कर रखे है, जो परे से भी परे है, परमश्रेष्ठ, अन्तरात्माओं में स्थित परमात्मा, रूप, वर्ण, नाम, विशेषण आदि से रहित है, जिसमे जन्म, वृद्धि, परिमाण, क्षय और नाश इन छह: विकारो का सर्व्था अभाव है, वे सर्वत्र है, और समस्त विश्व बसा हुआ है इसलिए विद्वानों ने नित्य, अजन्मा, अक्षय, अव्यय, एकरस, परब्रह्मा कहा है |

1. ब्रह्मा जी के रूप में सृष्टी की रचना करते है
2. विष्णु जी के रूप में सृष्टी का पालनकर्ता है
3. शंकर जी के रूप में समस्त चीजो का संहार कर देते है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्

कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

ब्रह्मा जी के अपने निजी मान से उनकी आयु 100 वर्ष माने गए है ब्रह्मा जी की इस 100 वर्ष आयु को "पर" कहते है, आधे को "परार्ध" कहते है और ब्रह्मा जी के एक दिन के आयु को "कल्प" कहते है

ब्रह्मा जी के एक दिन रूपी कल्प में "चौदह मनवन्तर" होते है, एक देवताओं के समूह के कार्यकाल को एक मनवन्तर कहते है, सूर्य से लेकर सप्तऋषि तारे तक के स्थान, देवताओं का निवास स्थान है जब मनवन्तर की समाप्ति होती है तो सूर्य से लेकर सप्तऋषि तारे तक के स्थान का संहार हो जाता है और यह सभी देवता अपने कर्म के अनुसार कुछ बैकुंठ धाम, कुछ ब्रह्म धाम को चले जाते है वह फ़िर इस लोक मे वापिस नहीं होते जो देवता उस लोक नही जा पाते वह पुन जन्म लेकर फ़िर से कर्मयोग के द्वारा बैकुंठ धाम जाने के लिय कार्य करते है इस तरह ब्रह्मा जी के एक दिन मे चौदह मनवन्तर आते और जाते है

सभी मनवन्तर एक सामान होता है किन्तु सभी मनवन्तर में जीवों की शक्ल सूरत भिन्न भिन्न होती है जैसे "चाक्षुस मनवन्तर" में मानव रूपी जीव की शक्ल बिल्ली के सामान था और इस वर्तमान "वैवस्त मनवन्तर" में दो पैर, दो हाथ और एक सर वाला है अगले मनवन्तर में दो पैर, चार हाथ से अधिक वाले जीव रूपी मानव होंगे

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

इस वर्त्तमान समय में ब्रह्मा जी के दिन रूपी कल्प के मनवन्तर का नाम इस प्रकार है
(1) स्वयंभू मनवन्तर (2) सवारोचिष मनवन्तर (3) उत्तम मनवन्तर (4) तामस मनवन्तर (5) रैवत मनवन्तर (6) चाक्षुस मनवन्तर (7) वैवस्वत मनवन्तर (8) सूर्यसावर्ण मनवन्तर (9) दक्षसावर्ण मनवन्तर (10) ब्रहासावर्ण मनवन्तर (11) धर्मसावर्ण मनवन्तर (12) रूद्रसावर्ण मनवन्तर (13) रोचमान मनवन्तर (14) भौत्य मनवन्तर

ब्रह्मा जी के एक दिन रूपी कल्प में इन "चौदह मनवन्तर" मे 6 मनवन्तर बीत चुका है अभी "सातवा मनवन्तर" चल रहा है जिसका नाम "वैवस्त मनवन्तर" है और आठ से चौदह मनवन्तर जो है वह इस मनवन्तर के बीत जाने के बाद एक एक कर के आयेगा और जायेगा इस तरह से ब्रह्मा जी के एक दिन की समाप्ति होती है

ब्रह्मा जी के 1000 चतुर्युग बराबर दिन होता है और इतने ही चतुर्युग के बराबर रात होती है इस तरह ब्रह्मा जी दिन रूपी कल्प मे मनवन्तर बनाते, श्री विष्णु जी सभी का पालन करते है और शंकर जी सभी का संहार करते रहते है कितने हीं कल्प आये और गये इसका तो व्याख्या करना अत्यन्त ही कठिन है यह सब सिर्फ़ शेष नाग रूपी भगवान विष्णु जी ही जानते है उनकी माया क़ी कोई अन्त ही नहीं है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

अभी जो वैवस्वत मनवन्तर चल रहा है इस वैवस्वत मनवन्तर के 71 चतुर्युग में 27 चतुर्युग बीत चुका है और 28वा चतुर्युग चल रहा है इस 28वा चतुर्युग में भी सत्य युग, त्रेता और द्वापर नाम की युग समाप्त हो चुका है अभी आखरी युग के कलयुग चल रहा है इसे भी समाप्त होने मे कुछ हीं समय बचा है

एक मनवन्तर के 71 चतुर्युग को देवताओं के गणना के अनुसार 12000 हजार दिव्य वर्ष कहते है इस एक मनवन्तर के 12000 दिव्य वर्ष में 4000 दिव्य वर्ष के सत्य युग होता है, 3000 दिव्य वर्ष के त्रेता होता है 2000 दिव्य वर्ष के द्वापर होता है और 1000 दिव्य वर्ष के कलियुग होता है,

पितरों का संध्या और संध्यांश सत्य युग मे 800 वर्ष के होते है, त्रेता युग मे 600 वर्ष के संध्या और संध्यांश होते है द्वापर मे 400 वर्ष के संध्या और संध्यांश होते है और कलियुग मे 200 वर्ष के संध्या और संध्यांश होते है

मनुष्यों के गणना के अनुसार एक मनवन्तर की आयु 4320000 वर्ष होते है |

मनुष्यों के एक मन्वन्तर के 4320000 वर्ष में दिन-रात 1577917828 होते है | 1577917828 दिन में महीना, तिथिक्षय, आधी मास और चन्द्र मास निचे दिए हुए अंकों जितना होता है

रवि मासों की संख्या 51840000 है, तिथिक्षय 25082252 दिन के होते है, अधिमास 1593336 होते है और चान्द्र मास 53433336 होते है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

मन्वन्तर के गणना करने की चार विधि है सूर्य के द्वारा, चन्द्र के द्वारा, ऋतू के द्वारा और नक्षत्र के द्वारा इसके अलावा 5वा विधि नहीं है इसी चार विधि के द्वारा मनुष्यों में गणना की जाती है

सूर्य के हिसाब से गणना करने पर मनुष्यों के 365 दिन का एक वर्ष होता है, चन्द्रमा के हिसाब से गणना करने पर मनुष्यों के 354 दिन का एक वर्ष होता है, गणित के हिसाब से गणना करने पर मनुष्यों के 360 दिन का एक वर्ष होता है, नक्षत्र के हिसाब से गणना करने पर मनुष्यों के 335 दिन का एक वर्ष होता है

इन्ही चार गणनाओं के द्वारा भारत वर्ष के पावन मनुष्य अपने कार्य को करने में करते है
1. सर्दी, गर्मी और वर्षा की गणना सूर्य के महीनो के द्वारा की जाती है
2. अग्निष्टोम कार्य जैसे यज्ञ, उत्सव और विवाह ये गणित के गणना द्वारा की जाती है
3. जीविका चलाने के कार्य समबन्धी की गणना माला-मास युक्त चन्द्रमा की गणना से की जाती है
4. ग्रहों की चाल का सही स्थिति जानने के लिए नक्षत्र के द्वारा गणना की जाती है

युगादि तिथियों का वर्णन
(1) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को सतयुग का प्रारम्भ होता है
(2) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के नवमी को त्रेता का प्रारम्भ होता है
(3) भ्रादपद मास के कृषण पक्ष की त्रयोदशी को द्वापर का प्रारम्भ होता है
(4) माध मास की पूर्णिमा को कलयुग का प्रारम्भ होता है

ये चारों युगादि तिथी है इन तिथियों में क्रम से सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग इन चारों युगों का प्रारम्भ होता है

जिस समय चन्द्रमा, सूर्य और वृहस्पति एक ही समय एक ही साथ पुष्य नक्षत्र के प्रथम पल में प्रवेश करेंगे, एक राशी पर एक साथ आवेंगे उसी समय सतयुग का आरम्भ हो जाएगा

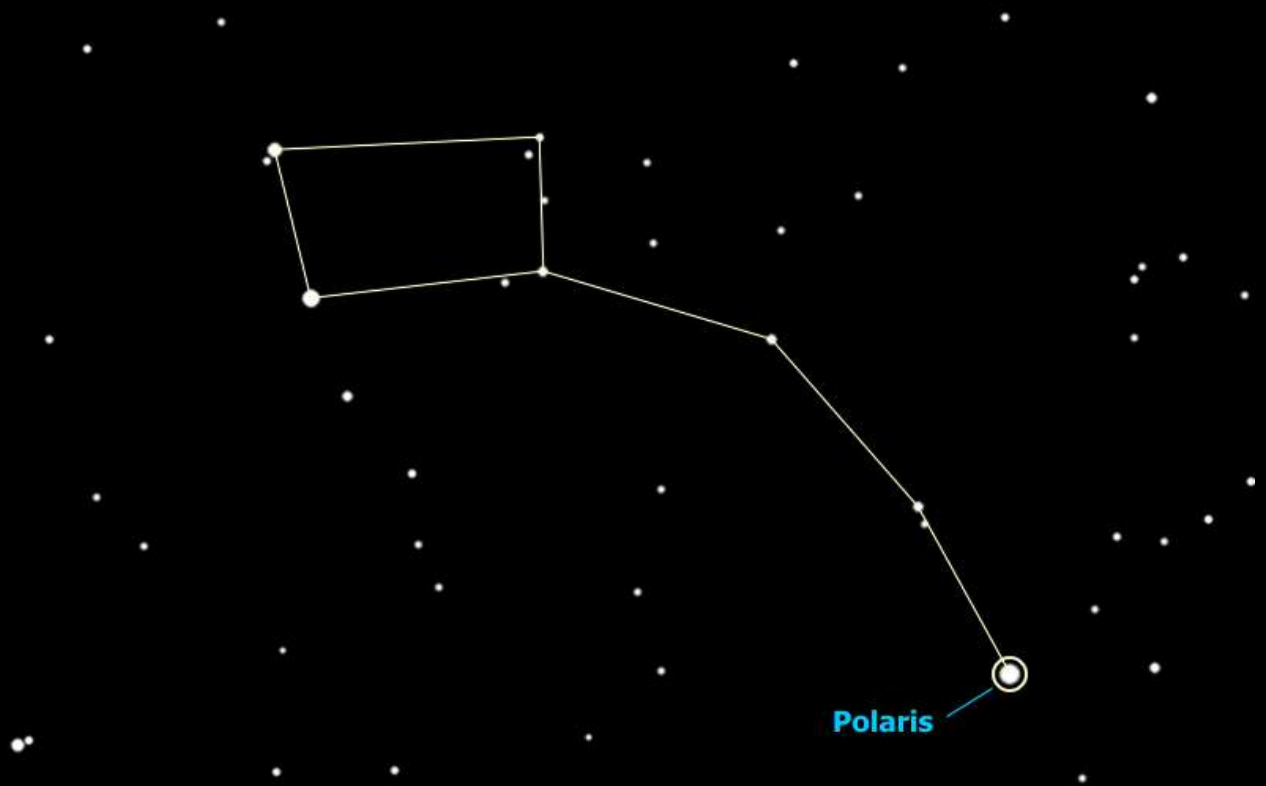

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्

कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

अब मनुष्यों के गणना विधी समझ लीजिये

(आँख के पलक को उठने और गिरने में जितना समय लगता है उसे निमेष कहते है)

निमेष

15 निमेष =1 काष्ठा

30 काष्ठा = 1 कला

30 कला = 1 क्षण

6 क्षण = 1 धडी

2 धडी = 1 मुहर्त

30 मुहर्त 1 दिन-रात (15 मुहर्त का दिन और 15 मुहर्त की रात होती है) (24 hrs)

30 दिन = 1 महीना

1 महीना में 2 पक्ष होते है जिसमे 15 दिन का कृष्णपक्ष 15 दिन को शुक्लपक्ष होता है

यह दो पक्ष पितरों का संध्या और संध्यांश है, इसमे संध्या पितरो की दिन होता है और रात्री को संध्यांश कहते है यह सांध्या और संध्यांश पृथ्वी की उत्तरायण कोण के मणिमय प्रदेश में होता है जिसे आजकल Alaska कहते है, पूर्णिमा वाले जो 15 दिन के मनुष्य के लिए जो रात्री होती है वह पितरों के लिए 1 रात होता है, जो आमवाश्या वाली 15 दिन की जो काली रात होती है वह पितरों का 1 दिन होता है इस तरह मनुष्यों का जो एक महीना का समय होता है वह पितरों के लिए एक दिन होता है

एक मनवनतर में संध्या और संध्यांश इस तरह से होता है सतयुग में 400 वर्ष के सध्या और 400 वर्ष के संध्यांश होता है, त्रेता में 300 वर्ष के स्नाध्या और 300 वर्ष के संध्यांश होता है, द्वापर में 200 वर्ष के सध्या और 200 वर्ष के संध्यांश होता है और कलयुग में 100 वर्ष के सध्या और 100 वर्ष के संध्यांश होता है

संध्या और संध्यांश के बिच में जो दिन रात होती है उसे “युग” कहते है, जब चार चतुर्युग वाला काल एक चरण से दूसरे चरण की ओर जाता है तो यह संध्या और संध्यांश की इस तरह के स्थिती होती है युग के आरम्भ में “संध्या” के समय दिन होता है, जब युग का अंत होने लगता है तब “संध्यांश” के समय दिन होते है यही इसका प्रमाण है यह स्थिती इस वर्त्तमान समय में पृथ्वी की उत्तरायण भाग के अलास्का नाम वाले जगह में “डेड हॉर्स” नाम के प्रांत में होते दिखाई देता है

2 महीना = 1 ऋतू
3 ऋतू = 1 अयन
2 अयन = 1 वर्ष (12 महीनो = 1 वर्ष)
1 वर्ष में 2 अयन होते है जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते है
6 महीना = 1 पहला अयन (उत्तरायण North Pole में होते है)
6 महीना = 1 दूसरा अयन (दक्षिणायन South Pole में होते है)

उत्तरायण देवताओं का 1 दिन, दक्षिणायन देवताओं का 1 रात्री होते है यह दिन और रात इस वर्तमान समय में पृथ्वी के उत्तरायण में जिसका वर्त्तमान नाम नार्थ अटलांटिका और दक्षिणायन में जिसका वर्त्तमान नाम साउथ अटलांटिका है वहाँ होता है यह इसका प्रमाण है

एक मनवंतर के सत्य युग में 4000 हजार दिव्य वर्ष, त्रेता में 3000 हजार दिव्य वर्ष, द्वापर में 2000 दिव्य वर्ष और कलयुग में 1000 दिव्य वर्ष होते है
चारो युगों के वर्षों को जोरने पर 10000 हजार दिव्य वर्ष यह देवताओं के वर्ष होता है तथा 2000 दिव्य वर्ष जो बचता है वह पितरों का संध्या और संध्यांश वर्ष है (400+400+300+300+200+200+100+100 = 2000) इस तरह 12000 हजार दिव्य वर्ष देवताओं का एक मनवंतर कहलाता है

मनुष्यों का 1 वर्ष = 1 दिन देवताओं का
मनुष्यों का 360 वर्ष = 1 वर्ष देवताओ का (देवताओं के वर्ष को दिव्यवर्ष कहते है)
इस प्रकार 12 हजार दिव्य वर्ष के देवताओं की आयु होती है जिसे “एक मन्वन्तर” कहते है इस मन्वन्तर को चार भागों में विभाजित किया गया है जिसका नाम सत्य-युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग है यह

चारों मिलकर एक चतुर्युग कहलाता है यह चतुर्युग एक मन्वन्तर में 71 बार-आता है इसलिए 71 चतुर्युग को एक मनवन्तर कहते है

71 युगो का समलित मान जिसे महायुग भी कहते है इन सभी युगों को मनुष्यों के वर्ष के अनुसार जोरने पर 4320000 वर्ष आता है देवताओं के एक युग 12000 वर्ष के होते है वेद ने गणित के गणना के द्वारा समस्त चीजो के बारे में बताया है गणित के गणना के हिसाब से 360 दिन बराबर एक वर्ष मनुष्यों का होता है इसलिय 12000X360 = 4320000 वर्ष होते है

4320000 वर्ष में 1577917828 दिन होते है अब इस दिन को सम्पूर्ण वर्ष से भाग कर दीजिय आपको 365.258.. दिन का एक सूर्य वर्ष मिलेगा

1577917828/4320000 = 365.2587564 दिन = 1 वर्ष
365.2587564/12 = 30.4382297 दिन = 1 महीना
1577917828/30.4382297 = 51840000.0115644 एक मन्वन्तर का सम्पूर्ण महीना
51840000.0115644X30.4382297 = 1577917828 एक मन्वन्तर का सम्पूर्ण दिन

अब वर्तमान समय के जो गणना है उसके अनुसार समय निकाल लीजिय
वैदिक गणना में 30 मुहूर्त = 1 दिन रात होता है और वर्तमान समय में यह 24 धंटे का होता है इस लिय 30 को 24 से भाग दे दीजिय आपको 1 धंटे का समय प्राप्त होगा और इस 1 धंटे को 365 दिन के आये हुए समय के साथ गुना कर दीजिय आपको आज के वर्तमान समय के धंटा मिनट सकेंड मिली सकेंड मिल जाएगा

15 = 1 निमेष (0.0005926 min)

15 निमेष =1 काष्ठा (0.0088889 min)

30 काष्ठा = 1 कला (0.1333333 min)

30 कला = 1 क्षण (4 min)

6 क्षण = 1 धडी (24 min)

2 धडी = 1 मुहर्त (48 min)

30 मुहर्त 1 दिन-रात (1440 min)

365.2587564 यह सम्पूर्ण 1 वर्ष का समय है

इसमे 365 दिन है, 2 मुहर्त, 5 धड़ी, 8 क्षण, 7 कला, 5 काष्ठा, 6 निमेष, 4 बार आँख का पलक उठाना गिरना

24 hrs X 60 min = 1440 min (one day min)

2X48=96 min, 5X24=120 min, 8X4=32 min, 7X, 6X, 4X

96+120+32=248 min / 60 min =4.1333333 (total day of year 365 day 4 hrs 13 min 33 sesond ….)

अगर मनुष्यों वाली दिन रात को सूर्य को प्रमाण मान कर गणना करते है तो 365 दिन 4 घंटे, 13 मिनट, 33 सेकेंड का समय आएगा परन्तु यदि आप मनुष्यों और पितर के दिन को आपस में जोर कर गणना करेंगे तो आपको 365 दिन, 6 घंटे 8 मिनट का समय आएगा

एक मनवन्तर में तिथिक्षय 25082252 दिन के होते है, तिथिक्षय को 4320000 वर्ष से भाग कर दीजिय, आपको एक वर्ष में होने वाले तिथिक्षय के दिन प्राप्त हो जाएंगे

25082252/4320000 = 5.806076851……..

इसमे तिथिक्षय 5 दिन है, 8 मुहर्त, 0 धड़ी, 6 क्षण, 0 कला, 7 काष्ठा, 6 निमेष, 8 बार आँख का पलक उठाना गिरना, इसके आगे भी गणना है किन्तु अत्यधिक होने के कारण इसको समलित नहीं किया गया है

8X48 = 384 min, 6X4 = 24 min, 384+24=408 min / 60 = 6.8

मनुष्यों के सौर गणना के अनुसार एक सूर्य वर्ष में 365 दिन 4 घंटा 13 मिनट का समय होता है, इसी तरह अब आप एक चतुर्युग में कितने दिन कौन सी युग के होते है वह समझ लीजिय.

12000 दिव्य वर्ष को प्रत्येक चतुर्युग के दिव्य वर्ष से भाग करे इससे आपको सत्य-युग, त्रेता, द्वापर और कलयुग नाम वाले काल के अंक प्राप्त होगा

एक मनवन्तर के 12000 दिव्य वर्ष में 4000 दिव्य वर्ष के सत्य-युग होता है, 3000 दिव्य वर्ष के त्रेता होता है, 2000 दिव्य वर्ष के द्वापर होता है और 1000 दिव्य वर्ष के कलयुग होता है इसके द्वारा प्रत्येक युग में होने वाले देवताओं और मनुष्यों के वर्ष कितने कितने होते है यह बताया जाता है
12000/4000 = 3 सत्ययुग
12000/3000 = 4 त्रेता
12000/2000 = 6 द्वापर
12000/1000 = 12 कलयुग

12000 दिव्य वर्ष को 71 चतुर्युग से भाग करने पर जो अंक प्राप्त हुआ है उसे 3, 4, 6, 12 से भाग कर दीजिय इससे आपको प्रत्येक चतुर्युग काल के दिव्य वर्ष प्राप्त हो जायेगा

एक मनवन्तर के सम्पूर्ण दिन को एक मनवन्तर के सम्पूर्ण चतुर्युग से भाग कर दीजिय आपको एक चतुर्युग का दिन प्राप्त हो जाएगा
1577917828 / 71 = 22224194.760563380281…….
22224194 एक मनवन्तर के सम्पूर्ण एक चतुर्युग के दिन है

सत्ययुग + त्रेता + द्वापर + कलयुग = एक चतुर्युग

इस एक चतुर्युग के दिन को 3, 4, 6, 12 से भाग कर दीजिय

22224194/3 = 7408064.66666.. एक चतुर्युग में सत्य-युग के दिन

22224194/4 = 5556048.5 एक चतुर्युग में त्रेता-युग के दिन

22224194/6 = 3704032.333333…. एक चतुर्युग में द्वापर-युग के दिन

22224194/12 = 1852016.16666… एक चतुर्युग में कलयुग के दिन

एक चतुर्युग में आने वाले सभी को आपस में जोड़ लीजिये

7408064 + 5556048 + 3704032 + 1852016 = 18520161.665

एक चतुर्युग में प्राप्त अंक को एक सम्पूर्ण चतुर्युग के दिन से घटा दे

22224194 – 18520161 = 3704033

इनमे से शेष अंक (3704033) पितरों के संध्या और संध्यांश है

एक मनवन्तर के 12000 दिव्य वर्ष के सत्य-युग में 400 वर्ष का "संध्या" और 400 वर्ष का "संध्यांश" होता है,

त्रेता में 300 वर्ष का "संध्या" और 300 वर्ष का "संध्यांश" होता है, द्वापर में 200 वर्ष का "संध्या" और 200 वर्ष का "संध्यांश" होता है, कलियुग में 100 वर्ष का "संध्या" और 100 वर्ष का "संध्यांश" होता है, अर्थात सत्य-युग में 800, त्रेता में 600, द्वापर में 400, और कलियुग में 200 वर्ष का संध्या और संध्यांश होता है

अब इन संध्या और संध्यांश को सम्पूर्ण "संध्या-संध्यांश" के वर्ष से भाग कर दे

2000/800 = 2.5 सत्ययुग

2000/600 = 3.33333 त्रेता

2000/400 = 5 द्वापर

2000/200 = 10 कलयुग

इस 3704033 दिन को 2.5, 3.3333333, 5, 10 से भाग कर दीजिय

3704033/2.5 = 1481613.2 दिन

3704033/3.3333333 = 1111209.911112099 दिन

3704033/5 = 740806.6 दिन

3704033/10 = 370403.3 दिन

इस प्रकार मनुष्यों वाली दिन-रात पूर्व-पश्चिम में1852016 दिन का होता है

कलयुग में पितरों वाले स्थान उत्तरकोण के मणिमय प्रदेश जिसे आजकल अलास्का कहते है अलास्का नाम के शहर के डेड-हार्स नामक प्रांत में 370403 इतना दिन होता है

कलयुग के दिव्य दिन वाले स्थान पृथ्वी के उत्तरायण (North Pole) और दक्षिणायन (South Pole) में 5066 दिन होता है

यह गणना पृथ्वी पर कहाँ और कितने दिन की होगी यह बताया गया है निचे वर्षो के द्वारा बताया

जाता है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

12000 दिव्य वर्ष को 71 चतुर्युग के दिव्य वर्ष से भाग करे
12000/71=169.01408 एक चतुर्युग का दिव्य वर्ष

12000 दिव्य वर्ष को प्रत्येक चतुर्युग के दिव्य वर्ष से भाग करे इससे आपको सत्य-युग, त्रेता, द्वापर और कलयुग नाम वाले काल के अंक प्राप्त होगा

एक मनवन्तर के 12000 दिव्य वर्ष में 4000 दिव्य वर्ष के सत्य-युग होता है, 3000 दिव्य वर्ष के त्रेता होता है, 2000 दिव्य वर्ष के द्वापर होता है और 1000 दिव्य वर्ष के कलयुग होता है इसके द्वारा प्रत्येक युग में होने वाले देवताओं और मनुष्यों के वर्ष कितने कितने होते है यह बताया जाता है
12000/4000 = 3 सत्ययुग
12000/3000 = 4 त्रेता
12000/2000 = 6 द्वापर
12000/1000 = 12 कलयुग

12000 दिव्य वर्ष को 71 चतुर्युग से भाग करने पर जो अंक प्राप्त हुआ है उसे 3, 4, 6, 12 से भाग कर दीजिय इससे आपको प्रत्येक चतुर्युग काल के दिव्य वर्ष प्राप्त हो जायेगा
169.01408/3 = 56.33802 दिव्य वर्ष सत्ययुग
169.01408/4 = 42.25352 दिव्य वर्ष त्रेता
169.01408/6 = 28.169013 दिव्य वर्ष द्वापर
169.01408/12 = 14.084507 दिव्य वर्ष कलयुग

3, 4, 6 और 12 से भाग करने पर जो अंक प्राप्त हुआ है उसे 360 से गुना कर दीजिये इसके द्वारा आपको प्रत्येक युग में मनुष्यों वाला कितने वर्ष का होता है वह प्राप्त हो जाएगा

56.338027 X 360 = 20281.69 (सत्य-युग)
42.25352 X 360 = 15211.267 (त्रेता -युग)
28.169013 X 360 = 10140.845 (द्वापर -युग)
14.084507 X 360 = 5070.4225 (कलयुग)

पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिणऔरउत्तरकोणमेंहोनेवालेदिन-रातकासम्पूर्णवर्षइसप्रकारसेहोगा

20281.69 वर्ष मनुष्यों के गणना विधि से सत्य-युग का समय होता है जो एक चतुर्युग के काल में होने वाले समय है
15211.267 वर्ष मनुष्यों के गणना विधि से त्रेता-युग का समय होता है जो एक चतुर्युग के काल में होने वाले समय है
10140.845 वर्ष मनुष्यों के गणना विधि से द्वापर-युग का समय होता है जो एक चतुर्युग के काल में होने वाले समय है
5070.4225 वर्ष मनुष्यों के गणना विधि से कलयुग का समय होता है जो एक चतुर्युग के काल में होने वाले समय है

अब चारों युग के वर्ष को आपस में जोड़ दीजिय आपको एक चतुर्युग का सम्पूर्ण वर्ष प्राप्त हो जाएगा
सत्ययुग + त्रेता + द्वापर + कलयुग = एक चतुर्युग

20281.69 + 15211.267 + 10140.845 + 5070.4225 = 50704.225
50704.225 एक चतुर्युग का सम्पूर्ण वर्ष है

एक मनवन्तर में कितने वर्ष का चारों काल होता है इसको जानने के लिय सभी काल के प्राप्त वर्ष को 71 से गुना कर दीजिये

20281.69 X 71 = 1439963 सत्ययुग (1440000)
15211.267 X 71 = 1080000 त्रेता
10140.845 X 71 = 720000 द्वापर
5070.4225 X 71 = 360000 कलयुग

दिव्य वर्ष जानने के लिए प्राप्त अंक में 360 से भाग कर दीजिय आपको ऊपर बताये गए सभी दिव्य वर्ष प्राप्त हो जाएंगे

1439963/360 = 3999.988 (4000) सत्ययुग
1080000/360 = 3000 त्रेता
720000/360 = 2000 द्वापर
360000/360 = 1000 कलयुग
1439963 + 1080000 + 720000 + 360000 = 3599963
3999.988 + 3000 + 2000 + 1000 = 9999.988 (10000 दिव्यवर्ष)

मनुष्यो वाले जो दिन रात होते है इस हिसाब से 3599963 वर्ष (3600000 वर्ष) एक मनवन्तर में होते है इसको 360 से भाग करे आपको 10000 दिव्य वर्ष मिल जाएगा

3599963/360 = 9999.8972222222 (10000 दिव्यवर्ष)
169.01408/3=56.338027X360=20281.69X71=1439963/360=3999.988 (4000) सत्ययुग
169.01408/4=42.25352X360=15211.267X71=1080000/360=3000 त्रेता
169.01408/6=28.169013X360=10140.845X71=720000/360=2000 द्वापर
169.01408/12=14.084507X360=5070.4225X71=360000/360=1000 कलयुग

इस समय कलयुग नाम वाला समय चल रहा है जिसकी आयु 5070 या 5071 वर्ष है जिसमे अब तक 5015 वर्ष समाप्त हो चुका है यह गणना इस समय अग्रेजी गणना के अनुसार 2013 वर्ष से यह सभी गणना की गयी है इस युग को समाप्त होने में मात्र कुछ और ही समय बच गया है जिसके बाद सतयुग आरम्भ हो जाएगा

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

“गणना करने की तीसरी विधि बतलाई जाती है”
पहला और दूसरा विधि तो अंको के द्वारा बताया गया है तीसरा विधि कलियुग के राजाओं के द्वारा समझाया गया है जैसे कलियुग शुरू होने से लेकर आखिर तक के राजा भारत वर्ष में कौन कौन होगा वह बताया जा रहा है इस समय वर्तमान अग्रेजी वर्ष के 2014 में भारत वर्ष में पुष्पमित्र राजा राज्य कर रहे है (अर्थात पुष्परूपी कमलदल के राजा बीजेपी रूपी "नरेंद्र दामोदर दास मोदी" राज्य कर रहे है) जो ब्राह्मणों, क्षेत्रीय और वैश्य के लिए अच्छा काम करेंगे

इसके बाद दुमित्र भारत वर्ष के राजा होंगे (अर्थात दो दल मिलाकर राजा होंगे इस दो दल में प्रमुख बीजेपी होगा) उसके बाद अंतिम कलियुगी राजा विश्व-सफर्जी होंगे इनले साथ ही कलियुग का अंत हो जाएगा

अब कलियुग के प्रारम्भ से आखरी राजा का नाम एवं कार्यकाल के द्वारा बताने जा रहा हूँ

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

जब श्रीकृष्ण निजधाम पधारे उस समय मगध में जरासंध के पुत्र सहदेव, और इंद्रप्रस्थ में पांडवों का जो श्रीकृष्ण के निज धाम जाने के वाद अपने पौत्र परीक्षित को राज्य पर बिठा कर वन को चले गए, का राज्य था यहाँ से 28वे कलयुग के प्रारम्भ होता है और अंत तक जितने भी राजा होंगे उन सभी का वर्णन करता हूँ

पहले जरासंध के पुत्र सहदेव से लेकर कलयुग के आखरी राजा तक का वर्णन करता हूँ इसके उपरान्त परीक्षित से लेकर कलयुग के आखरी राजा का वर्णन करूंगा

(1) जरासंध, सहदेव, सोमापी, श्रुतश्रवा, अयुतायु, निरमित्र, सुनेत्र, बृहत्कर्मा, सेनजीत, श्रुतञ्जय, विप्र, शुचि, क्षेम्य, सुव्रत, धर्म, सुश्रवा, दृढसेन, सुबल, सुनीत, सत्यजित, विश्वजीत, रिपुनञ्जय
यह सभी राजा गण पृथ्वी पर मगध राज्य को 1000 वर्ष राज्य करेंगे जरासंध वंश के रिपुंजय नाम के जो अंतिम राजा होगा उसका सुनिक नामक एक मंत्री होगा वह रिपुंजय को मारकर अपने पुत्र प्रधोत का राजयभिषेक करेगा

(2) सुनिक, प्रधोत, बलाक, विशाखयूप, जनक, नन्दिवर्धन,
प्रधोत वंश में यही पांच नरपति होगा इनकी संज्ञा होगी "प्रधोतन" ये 138 वर्ष तक पृथ्वी का उपभोग करेंगे इसके बाद शिशुनाग नाम का राजा होगा

(3) शिशुनाभ, काकवर्ण, क्षेमधर्मा, क्षतिजा, विधिसार, अर्भक, उदयन, नदीवर्धन, महानन्दि
ये शिशुनाभ वंशीय राजा 362 वर्ष राज्य करेंगे महानन्दि शूद्र कन्या से विवाह करके उसके गर्भ से महापध नामक नन्द का जन्म देगा

(4) नन्द

महानन्दि शूद्र कन्या से विवाह करके उसके गर्भ से महापध नामक नन्द का जन्म देगा जो दूसरे परशुराम के सामान सम्पूर्ण क्षत्रियों का नाश करने वाला होगा तब से शूद्र जातीय राजागण राज्य करेंगे इस नन्द रूपी राजा का सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य होगा इस नन्द के आठ पुत्र होंगे जो नन्द के पीछे राज्य करेगा नन्द और इसके आठ पुत्र जिसमे सुमाली नाम के ज्येष्ठ पुत्र होगा यह सब सौ 100 वर्ष तक राज्य करेगा इन नवौ नन्दो के राज्य को "कौटिल्य" नामक एक ब्राह्मण नष्ट कर देगा यह ब्राह्मण बाद में "चाणकय" के नाम से प्रसिद्द होगा यह चाणकय रुपी ब्राह्मण इन नन्द के राज्य को नष्ट करने के बाद मुरा और नन्द द्वारा उतपन्न हुय चन्द्र गुप्त नामक राजा का अभिषेक करेगा तब से चन्द्र गुप्त मोर्य राजा का शासन प्रारम्भ होगा

(5) चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोकवर्धन, सुयशा, दशरथ, संयुत, शालीशुक, सोमशर्मा, शतधन्वा, बृहद्रथ

मौर्य वंश के ये दस राजा कलियुग में 137 वर्ष तक पृथ्वी का उपभोग करेंगे बृहद्रस्थ का सेनापति होगा पुष्यमित्र शुंग जो अपने स्वामी को मारकर स्वयं राजा बन बैठेगा

(6) पुष्यमित्र, अग्निमित्र, सुजेष्ठ, वसुमित्र, उदंक, पुलिंदक, धोषवासु, ब्रजमित्र, भागवत, देवभूत

ये दस नरपति 112 वर्ष पृथ्वी का पालन करेंगे, शुंग वंशीय नरपति का राजयकाल समाप्त होने पर यह पृथ्वी कण्व वंशीय नरपतियों के हाथ में चली जाएगी कण्व वंशीय नरपति पूर्व वर्ती राजाओं से काम गुणवाले होंगे शुंग वंशी का अंतिम राजा जो देवभूति होगा वह बड़ा ही लम्पट होगा उसे उसका मंत्री कण्व वंशी वसुदेव मारकर स्वयं अपनी बुद्धि से राज्य करेगा

(7) वसुदेव, भुमित्र, नारायण, सुशर्मा

ये चार कण्व वंशीय राजा पृथ्वी को 45 वर्ष तक राज्य करेंगे| काण्व वंशीय सुशर्मा को उसका बलिपुच्छक नामवाला आंध्रजातीय सेवक मारकर स्वयं पृथवी का राज्य करेगा उसके पीछे उसका भाई कृष्णदेव पृथ्वी का राज्य करेगा

(8) बलिपुच्छक, कृष्णदेव, शांतकीर्ण, पूर्णोत्संग, शातकीर्ण, लम्बोदर, पिलक, मेधस्वाति, पटुमान, अरिष्टकर्मा, हालाहल, पललक, पुलिन्दसेन, सुन्दर, शातकीर्ण, शिवस्वाति, गोमतीपुत्र, अलिमान, शान्तकीर्ण, शिवश्रित, शिवस्कंध, यज्ञश्री, द्वियज्ञ, चन्द्रश्री, पुलोमाची
चकोर के आठ पुत्र होंगे जो सभी बहू कहलायेंगे इनमे सबसे छोटे का नाम होगा शिवस्वाति वह बड़ा वीर होगा और शतुओं का दमन करेगा
विजय के दो पुत्र होंगे चन्द्रविज्ञ और लोमधि ये तीस राजागण पृथ्वी का 456 वर्ष भोगेंगे

(9) इसके पश्चात अवभृति - नगरी के सात आभीर, दस गर्दभी और सोलह कनक पृथ्वी का राज्य करेंगे ये सब के सब बरे लोभी होंगे
(10) इसके बाद आठ यवन और चौदह तुर्क राज्य करेंगें इसके बाद दस गुरुण्ड और ग्यारह मौन नरपति होंगे मौन नरपति के अतिरिक्त ये सब 1099 वर्ष तक पृथ्वी का उपभोग करेंगे

(11) ग्यारह मौन नरपति तीन 300 सौ वर्ष तक पृथ्वी का शासन करेंगे

(12) जब मौनों का राजयकाल समाप्त हो जाएगा तब किलकिला नाम की नगरी में भुतनन्द नामक राजा होगा भूतनंद का वडिगरी, वडिगरी के भाई शिशुनंदी तथा यशोनान्दी और प्रवीरक ये एक सौ छः वर्ष तक राज्य करेंगे ये सब तेरह होंगे ये सब के सब वाहिरक कहलायेंगे, वाहिरक वंशी नरपति एक साथ ही विभिन्न प्रदेशों में राज्य करेंगे इनमे से सात आंध्र देश के तथा सात ही कोसल देश के अधिपति होंगे कुछ विदुर भूमि के शासक और कुछ निषेध देश के स्वामी होंगे

(13) इसके बाद पुष्पमित्र नामक क्षेत्रीय और इसके बाद दुमित्र का राजय होगा

(14) इनके बाद मगध देश का राजा होगा जिसका नाम विश्व-स्फूर्जी होगा,
यह पहले पुरञ्जय के सामान ही द्वितीय पुरञ्जय होगा, यह ब्राह्मण आदि उच्च वर्णों को पुलिंद, यदु, और मद्र आदि म्लेच्छ प्राय जातियों के रूप में परिणत कर देगा इसकी बुद्धि इतनी दुष्ट होगी की यह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों का नाश करके शूद्र प्राय जनता की रक्षा करेगा यह अपने बल वीर्य से क्षत्रियों को उजाड़ देगा और पदमावती पूरी को राजधानी बनाकर हरिद्वार से लेकर प्रयाग पर्यन्त सुरक्षित पृथ्वी

का राज्य करेगा, ज्यो ज्यो धोर कलियुग निकट आता जाएगा त्यों त्यों सौराष्ट्र , अवन्ति, आभीर, शुर, अबुर्द और मालवा देश के ब्राह्मण गण संस्कार शून्य हो जाएंगे तथा राजालोग भी शूद्र तुल्य हो जाएंगे
कोसल, आंध्र, पुण्ड्र, ताम्रलिप्त और समुद्र तटवर्ती पूरी की देवरक्षित नामक एक राजा रक्षा करेगा
कलिंग, महिष, महेंद्र और भौम आदि देशों को गुह नरेश भोगेंगे नैषध, नैमिषक और कालकोषक आदि जनपदों को मणि-धान्यक-वंशीय राजा भोगेंगे

त्रैराज्य और मुषिक देशों पर कनक राजा राज्य करेंगे सौराष्ट, अवन्ति, शूद्र, आभीर तथा नर्मदा तटवर्ती मरुभूमि पर वार्त्य द्विज, आभीर और शूद्र आदि राजागण भोग करेंगे
समुद्र तट, दाविकोवी, चन्दभागा और कश्मीर आदि देशों का व्रात्य, म्लेच्छ और शूद्र आदि राजागण भोग करेंगे
ये सभी राजा गण पृथ्वी पर एक ही समय में होंगे ये थोड़ी प्रसन्नता वाले, अत्यंत क्रोधी, सर्वदा अधर्म, और मिथ्या भाषण में रुचि रखने वाले, स्त्री-बालक और गौओं की हत्या करने वाले, पर-धन हरण में रुचि रखने वाले, अल्पशक्ति तम:प्रधान उत्थान के साथ ही पतनशील, अल्पायु, महती कामनावाले, अल्पपुण्य और अत्यंत लोभी होंगे इस सब सभी देशों को परस्पर मिला देंगे तथा उन राजाओं के आश्रय से ही बलवान और उन्ही के स्वभाव का अनुकरण वाले मलेक्च्छ तथा आर्य के विपरीत आचरण करते हुय सारी प्रजा को नष्ट भ्रष्ट कर देंगे

ये सब आपस में ही एक दूसरे को उत्पीड़ित करेंगे, भयंकर युद्ध करेंगे और लड़ते-झगरते अपने को नष्ट कर लेंगे, इसके साथ ही प्राकृतिक प्रलय आएगा और समस्त चीजो को बहा ले जाएगा

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

“गणना करने की चौथी विधि बतलाई जाती है”
बारह महीनों का एक वर्ष होता है और 12 महीनों में 12 राशी होते है जिसका नाम इस तरह से होता है
महीना का नाम :- (1) वैशाख (2) ज्येष्ठ (3) आषाढ़ (4) श्रावण (5) भाद्रपद (6) आश्विन (7) कार्तिक (8) मार्गशीर्ष (9) पौष (10) माघ (11) फाल्गुन (12) चैत्र

राशी का नाम :- (1) मेष (2) वृष (3) मिथुन (4) कर्क (5) सिंह (6) कन्या (7) तुला (8) वृश्चिक (9) धनु (10) मकर (11) कुम्भ (12) मीन

महीने में 7 दिन का सप्ताह होता है इन 7 दिन रूपी सप्ताहों का नाम ब्रह्माण्ड के 7 प्रमुख ग्रह के कारण उनके ही नाम पर है जिसका नाम सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहसप्ति, शुक्र और शनि है

सृष्टी काल के प्रथम दिन इन 7 प्रमुख्य ग्रहों की स्थिति इस प्रकार थी
(5)शनि -(6)वृहसप्ति -(7)मंगल -(1)रवि -(4)चन्द्रमा -(3)बुध -(2)शुक्र

यह सभी ग्रह सूर्य के बाये और दाये तरफ पर स्थापित था सूर्य के बाए तरफ में मंगल, वृहसप्ति और शनि था और सूर्य के दाए तरफ चन्द्रमा, बुध और शुक्र था

जब इनमे गति उतपन्न हुआ उस समय प्रथम रूप-रेखा इस प्रकार से था

(1) सृष्टी के प्रारम्भ में सवर्प्रथम सूर्य दिखाई दिया अत: पहला दिन का स्वामी सूर्य को माना गया इस दिन का नामकरण सुर्यवार हुआ

(2) दूसरे दिन शुक्र दिखाई दिया इसलिए इसका नाम शुक्रवार हुआ

(3) तीसरे दिन बुध दिखाई दिया इसलिए इसका नाम बुधवार हुआ

(4) चौथे दिन चन्द्रमा दिखाई दिया इसलिए इसका नाम चंद्रवार हुआ

(5) पांचवे दिन शनि दिखाई दिया इसलिए इसका नाम शनिवार हुआ

(6) छठवे दिन वृहसप्ति दिखाई दिया इसलिए इसका नाम वृहस्पतिवार हुआ

(7) सातवे दिन मंगल दिखाई दिया इसलिए इसका नाम मंगलवार हुआ

इसी क्रम के पुनरावर्तन के फलस्वरूप पहले दिन की चौबसावी होरा बुध के स्वामित्व पर समाप्त हुई तब दूसरे दिन की पहली होरा का नाम चंद्रवार हुआ

इसी क्रम से तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी मंगल हुआ, चौथे दिन का बुध, पांचवे दिन का वृहस्पति, छठे दिन का शुक्र और सातवे दिन का शनि हुआ

इस तरह सृष्टी में पहले वारों का क्रम हुआ, आठवे दिन फिर पहली होरा का स्वामी सूर्य हुआ, इसी क्रम से अगले दिनों की पहली होरा के स्वामी पूर्ववत ग्रह होते आ रहे है निरंतर सात वारों का चक्र चलता जा रहा है इन सात दिनों के इस समूह को "सप्ताह" कहा गया

दाए से बाए तरफ बराबर दुरी के 109 सफ़ेद लाईन खिचे, फिर ऊपर से निचे बराबर दूरी पर 109 सफ़ेद लकीर खिचे इस प्रकार आपके पास 108X108 का चकोर घर प्राप्त होगा

इस चकोर घर के बीच के 6X6 में "पृथ्वी" को स्थापित करे

12X12 के घर को सूर्य माने, 18X18 के घर को चन्द्रमा माने, 30X30 घर को नक्षत्र माने, 42X42 के घर को बुध माने, 54X54 के घर को शुक्र माने, 60X60 के घर को मंगल माने, 72X72 के घर को वृहस्पति माने, 84X84 के घर को शनि माने, 90X90 के घर को सप्तऋषि माने, 96X96 के घर को ध्रुव माने, 108X108 के घर को शिशुमार माने,

इस प्रकार इन प्रमुख्य ग्रहों, नक्षत्र और तारादि का क्षेत्र बटा हुआ है, सभी मनु एवं तारादि का अपना क्षेत्र है जिसमे वह निरंतर भ्रमण करते आ रहे है

सूर्य अपने 360 डिग्री को 365 दिन में पूरा करता है, चन्द्रमा अपने 360 डिग्री को 354 दिन में पूरा करता है, नक्षत्र अपने 360 डिग्री को 335 दिन में पूरा करता है, बुध अपने 360 डिग्री को 88 दिन में पूरा करता है, शुक्र अपने 360 डिग्री को 224 दिन में पूरा करता है, मंगल अपने 360 डिग्री को 687 दिन में पूरा करता है, वृहसप्ति अपने 360 डिग्री को 4332 दिन में पूरा करता है, शनि अपने 360 डिग्री को 10766 दिन में पूरा करता है

पृथ्वी से एक लाख योजन ऊपर सूर्य है, सूर्य से एक लाख योजन ऊपर चन्द्रमा है, चन्द्रमा से दो लाख योजन ऊपर नक्षत्र मंडल है, नक्षत्र मंडल से दो लाख योजन ऊपर बुध है, बुध से दो लाख योजन ऊपर शुक्र है, शुक्र से एक लाख योजन ऊपर मंगल है, मंगल से दो लाख योजन ऊपर वृहस्पति है, वृहस्पति से दो लाख योजन के दूरी पर शनि है, शनि से एक लाख योजन दूरी पर सप्तऋषि है, सप्तऋषि से एक लाख योजन की दूरी पर ध्रुव है

पृथ्वी से लेकर सप्तऋषि तक के स्थान एक मनवन्तर के बाद संहार हो जाता है, चौदह मनवन्तर तक यह कार्य होता है चौदवे मनवन्तर में ध्रुव तक का स्थान का संहार हो जाता है जो ब्रह्मा जी के एक कल्प अर्थात एक दिन कहलाता है

ध्रुव के ऊपर शिशुमार, शिशुमार से ऊपर ब्रह्मलोक, ब्रह्मलोक से ऊपर रूद्रलोक है रुद्रलोक से ऊपर विष्णुलोक है यही तक इस ब्रह्माण्ड का विस्तार है

योजन दूरी नापने के लिए होता है योजन इस तरह से बनाता है ब्रह्मांड के सबसे सूक्षम तत्व परमाणु है इसके बाद त्रियानु है त्रियानु को आप या हम रोशनदानी से सूर्य की रोशनी परने पर जो पृथ्वी के धूल का कण दिखाई देता है वह त्रियानु है त्रियानु से आठ गुना छोटा परमाणु होता है, इसके बाद वालाग्र, लिक्षा, युका, यवोदर ये सब 1 के अपेक्षा 8 गुना बड़ा है, इसके बाद यवका हुआ जो पिछले से 8 गुना बड़ा हुआ, 8 यवका एक अंगुल होता है, 6 अंगुल का एक वित्ता होता है, 2 वित्ता का 1 हाथ होता है, 4 हाथ का एक धनुष होता है, 2000 धनुष का 1 कोस होता है, 4 कोस के बरावर 1 योजन होता है

6 अंगुल = 1 वित्ता

2 वित्ता = 1 हाथ

4 हाथ = 1 धनुष

2000 धनुष = 1 कोस

4 कोस = 1 योजन

योजन को समझने के लिए आज कल जो हम लोग नापने के लिए इस्तेमाल करते है उस में योजन को बदल देते है इसके लिए मैंने अपने हाथ का माप लिया जो 16" (इंच) का है अब इस हिसाब से ऊपर बताये गए को गुना करते जाइये

1 हाथ = 16” (Inch)

4 हाथ = 1 धनुष

16X4 = 1 धनुष (64”)

2000 धनुष = 1 कोस (3 ¼ KM, 3.25)

64X2000 = 1 कोस (128000” inch)

4 कोस = 1 योजन

128000X4= 512000” = 1 योजन

1 योजन = 13 KM

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्

कल्प गणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

“गणित के अनुसार गणना की पाचवी विधि बतलाई जाती है”

अब गणित के जहा जहां प्रमुख प्रमुख बाते बताई गयी है उसे एक जगह एकत्रित करले

ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण संख्याओं के समूह को एक “कल्प” कहते है

ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण संख्याओं को चार भागों में बाटा गया है जिसका नाम सत्य-युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग है इन चारो के, समूह को, “चतुर्युग” कहते है, इस “चतुर्युग” को 1000 भागों में बाटा गया है जिसे 1000 चतुर्युग = एक "कल्प" कहते है

इस हजार चतुर्युग को चौदह भागों में बाटा गया है जिसका नाम “मन्वन्तर” दिया गया है एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युग को, रखा गया है यही एक देवताओं के समूह का आयु और शासनकाल है, अब इसके आगे पुराण के अनुसार समझे:-

(1) ब्रह्माजी के एक दिन के समय को "कल्प" कहते है

(2) एक कल्प में “14 मन्वन्तर” आते जाते है एक मन्वन्तर में एक देवताओं और एलियनों के समूह का राज्य काल चलता है यही देवताओं और एलियनों की आयु है देवताओं और एलियनों की गणना वृहस्पति मान के द्वारा होता है इस वृहस्पति मान में 60 कैलेंडर का प्रयोग किया जाता है जिसे स्वस्तर आदि कहते है

(3) एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युग होते है एक चतुर्युग में चार काल होते है जिसका नाम (1) सत्ययुग (2) त्रेतायुग (3) द्वापरयुग (4) कलियुग है

(4) मानव वर्ष के हिसाब से एक मन्वन्तर में सूर्य के प्रमाण मानकर गणना करने पर 4320000 वर्ष होते इस 4320000 वर्ष में 1577917828 दिन होते है इस 4320000 वर्ष में 51840000 महीना होते है

(5) 4320000 वर्ष में चन्द्रमा के 53433336 महीना होता है

(6) 4320000 वर्ष में अधिमास 1593336 होते है

(7) सूर्य के वर्ष में जो 5 दिन कुछ घंटे और मिनट जो होते है यह तिथिक्षय है 4320000 वर्ष में 25082252 तिथि क्षय होते है

(8) मनुष्यों के लिए 4 कैलेंडर वर्ष है (1) सौरवर्ष, (2) चंद्रवर्ष, (3) नक्षत्रवर्ष और (4) सावनवर्ष

(9) देवताओं और एलियनों के लिए 60 कलैंडर वर्ष है जिसमे 5, 9, 12 का अलग अलग भेद है जहा एलियनों का शव्द आया हुआ है यह देवताओं के गण अर्थात सहायक है जिसे आजकल एलियन कहते है

(10) मनुष्यों की गणना एक से दश-शंख है जिसका नाम यह है (1) एक (2) दस (3) सौ (4) सहस्र (5) दश सहस्र (6) लक्ष (7) दश लक्ष (8) करोड (9) दश करोड (10) अरब (11) दश अरब (12) खर्व (13) दश खर्व (14) पद्म (15) दशपद्म (16) नील (17) दशनील (18) शंख (19) दशशंख या महाशंख यह सभी गणना भारत वर्ष के मनुष्य अपने प्राकृतिक भाषा के अनुरूप बोलते है

(11) देवताओं की गणना एक से दश-अनंत है जिसका नाम यह है (1) एक (2) दस (3) सौ (4) सहस्र (5) दश सहस्र (6) लक्ष (7) दश लक्ष (8) करोड (9) दश करोड (10) अरब (11) दश अरब (12) खर्व (13) दश खर्व (14) पद्म (15) दशपद्म (16) नील (17) दशनील (18) शंख (19) दशशंख (20) क्षिती (21) दश क्षिती (22) क्षोभ (23) दशक्षोभ (24) ऋद्धी (25) दशऋद्धी (26) सिद्धी (27) दशसिद्धी (28) निधी (29) दशनिधी (30) क्षोणी (31) दशक्षोणी (32) कल्प (33) दशकल्प (34) त्राही (35) दशत्राही (36) ब्रह्मांड (37) दशब्रह्मांड (38) रुद्र (39) दशरुद्र (40) ताल (41) दशताल (42) भार (43) दशभार (44) बुरुज (45) दशबुरुज (46) घंटा (47) दशघंटा (48) मील (49) दशमील (50) पचूर (51) दशपचूर (52) लय (53) दशलय (54) फार (55) दशफार (56) अषार (57) दशअषार (58) वट (59) दशवट (60) गिरी (61) दशगिरी (62) मन (63) दशमन (64) वव (65) दशवव (66) शंकू (67) दशशंकू (68) बाप (69) दशबाप (70) बल (71) दशबल (72) झार (73) दशझार (74) भार (75) दशभीर (76) वज्र (77) दशवज्र (78) लोट (79) दशलोट (80) नजे (81) दशनजे (82) पट (83) दशपट (84) तमे (85) दशतमे (86) डंभ (87) दशडंभ (88) कैक (89) दशकैक (90) अमित (91) दशअमित (92) गोल (93) दशगोल (94) परिमित (95) दशपरिमित (96) अनंत (97) दशअनंत

सूर्य के महीनों का वर्णन:-
सूर्य की एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक "सौर मास" होता है
(10) मकर (11) कुम्भ (12) मीन (1) मेष (2) वृष (3) मिथुन - इन छः महीनो में सूर्य उत्तरायण रहता है जिसे आजकल साउथ- पोल कहते है, यह देवताओं का दिन होता है

(4) कर्क (5) सिंह (6) कन्या (7) तुला (8) वृश्चिक (9) धनु - इन छः महीनों में सूर्य दक्षिणायन होते है, जिसे आजकल नार्थ- पोल कहते है यह देवताओं का रात्री है

गृह प्रवेश, विवाह, प्रतिष्ठा, तथा यज्ञोपवीत आदि शुभ कर्म उत्तरायण के मासों में करना चाहिय
दक्षिणायन में उक्त कार्य निहित माना गया है अत्यंत आवश्यकता हो तो उस समय पूजा आदि यत्न करने से शुभ होता है

(10) मकर (11) कुम्भ (12) मीन (1) मेष (2) वृष (3) मिथुन - इन छः महीनो में क्रम से शिशिर, वसंत और ग्रीष्म - ये तीन ऋतुएँ उत्तरायण में होती है

(4) कर्क (5) सिंह (6) कन्या (7) तुला (8) वृश्चिक (9) धनु - इन छः महीनो में क्रम से वर्षा, शरद और हेमन्त - ये तीन ऋतुएँ दक्षिणायन में होती है

नक्षत्र के महीनों का वर्णन:-
चन्द्रमा द्वारा सब नक्षत्रो के उपभोग में 27 दिन से कुछ अधिक समय लगता है वह एक "नक्षत्र मास" होता है
नक्षत्रों की संख्या 28 है जिसे चन्द्रमा 27 दिन से कुछ अधिक काल में पूरा करती है जिसके कारण नक्षत्र में 27 ही गणना की जाती है 28वा नक्षत्र की गणना तीसरे महीने में किया जाता है
उन नक्षत्रो के नाम इस प्रकार है:- (1) अश्वनी (2) भरणी (3) कृतिका (4) रोहिणी (5) मृगशिरा (6) भद्रा (7) पुनर्वसु (8) पुष्य (9) अश्लेषा (10) माधा (11) पूर्वाफाल्गुनी (12) उत्तराफाल्गुनी (13) हस्त (14) चित्रा (15) स्वाती (16) विशाखा (17) अनुराधा (18) ज्येष्ठा (19) मूल (20) पुरवा-आषाढ़

(21) उत्तरा-आषाढ़ (22) अभिजीत (23) श्रवण (24) धनिष्ठा (25) शतभिषा (26) पुरवा-भ्राद-पद (27) उत्तरा-भ्राद-पद (28) रेवती
रेवती नाम वाली नक्षत्र अधिकतर तीसरे महीने में आती है

नक्षत्रो वाली दिन-रात कुरुवर्ष के मणिमय प्रदेश में होती है, जहा तरह तरह के दिन रात होते है यही से युगों की गणना की जाती है जो इस वर्तमान समय में मणिमय प्रदेश को अलास्का कहते है और कुरुवर्ष के द्वीप का नाम डेनमार्क है

चन्द्रमा के महीनों का वर्णन:-
शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक "चन्द्र मास" होता है
प्रत्येक चन्द्र महीना में दो पक्ष होते है जिसे देवतापक्ष और पितरपक्ष कहते है किन्तु विद्वान पुरुष इसे शुक्ल और कृष्ण पक्ष कहते है ये दोनों पक्ष शुभा-शुभ कार्यों में सदा उपयुक्त माने जाते है यह दोनों पक्ष 15-15 दिन का होता है

जिस रात्री में चन्द्रमा बिलकुल दिखाई नहीं देती है वह तिथि पितरपक्ष की अमावस्या कही जाती है
जिस रात्री में चन्द्रमा पूर्ण रूप में दिखाई देती है वह तिथि देवतापक्ष की पूर्णिमा कही जाती है
पूर्णिमा के बाद के 15 दिन चन्द्रमा थोड़ा-थोड़ा करके घटने लगता है तथा पंद्रहवी दिन बिलकुल दिखाई नहीं देता उसे पितरपक्ष कहते है जिस दिन चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता उस दिन को अमावस्या कहते है

अमावस्या के बाद के 15 दिन चन्द्रमा प्रतिदिन आकाश में थोड़ा-थोड़ा बढ़ाना आरम्भ होता है तथा पंद्रहवे दिन चन्द्रमा अपने पूर्ण रूप में दिखाई देता है उसे देवतापक्ष कहते है जिस दिन चन्द्रमा बिल्कुल साफ़ और प्रकाशमय दिखाई देता है उस दिन को पूर्णिमा कहते है
पूर्णिमा और अमावश्या:- दो प्रकार की होती है
पूर्णिमा (1) अनुमति (2) राका और अमावश्या (1) सिनीवाली (2) कुहू
(1) अनुमति :- जिस पूर्णिमा को, दिन में, पूर्ण चन्द्रमा से युक्त हो वह पूर्णिमा "अनुमति" कहलाती है
(2) राका :- जिस पूर्णिमा को, रात्री में, पूर्ण चन्द्रमा से युक्त हो वह "राका" कहलाती है

(3) सिनीवाली :- जिस अमावस्या में चन्द्रमा की किंचित कला का अंश शेष रहता है वह "सिनीवाली" कही गयी है
(4) कुहू :- जिस अमावस्या में चन्द्रमा की सम्पूर्ण कला लुप्त हो जाती है वह अमावस्या "कुहू" कहलाती है

पूर्णिमा और आमवाश्या दो प्रकार के होने के कारण यह है जब चन्द्रमा 29 या उससे कम दिन का महीना होता होता है उस समय चन्द्रमा दिन में ही दिखाई देती है, महीना के 30 या उससे अधिक होने पर रात्री में दिखाई देता है उसी प्रकार अमावश्या का भी है 29 या उससे कम होने पर वह हल्की सी आभा के साथ दिखाई देती है उसी तरह 30 या अधिक दिन के महीना होने पर चन्द्रमा बिल्कुल नहीं दिखाई देता है

जिस तरह पृथ्वी पर तीन तरह के दिन-रात होते है उसी प्रकार चन्द्रमा के भी तीन प्रकार है इसको जानने के लिए पहले आपको सूर्य से लेकर शनि ग्रह तक के ग्रह, पृथ्वी को एक मनवन्तर में कितने बार चक्कर लगाते है वह जान लीजिये

(1) सूर्य एक मनवन्तर में 4320000 बार घूमता है सूर्य अपने ही स्थान पर घूमता है जैसे कोई पहिया अपने ही जगह पर धूमता है दूर से देखने पर वह आपको घूमता हुआ नहीं दिखाई देगा.
(2) चण्द्रमा एक मनवन्तर में 57753336 बार घूमता है
(3) मंगल एक मनवन्तर में 2296832 बार घूमता है
(4) बुध एक मनवन्तर में 17937060 बार घूमता है
(5) वृहस्पति एक मनवन्तर में 364220 बार घूमता है
(6) शुक्र एक मनवन्तर में 7022376 बार घूमता है
(7) शनि एक मनवन्तर में 146568 बार घूमता है

अब आपको मालुम है देवताओ की आयु एक मनवन्तर तक होती है जिसे 12000 दिव्य वर्ष कहते है इसको मनुष्यों के गणना के अनुसार 4320000 वर्ष होते है और इस 4320000 वर्ष में सूर्य को प्रमाण रखकर 1577917828 दिन-रात होते है

अब समस्त ग्रह को दिन-रात वाले अंक से भाग कर दीजिये जो अंक प्राप्त हो वह उस ग्रह के दिन-घंटा-मिनट होगा

(1) सूर्य 1577917828 / 4320000 = 365.258756481481.. एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(2) चण्द्रमा 1577917828 / 57753336 = 27.321674162683866435 00 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(3) मंगल 1577917828 / 2296832 = 686.9974939394784 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(4) बुध 1577917828 / 17937060 = 87.96970228119881 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(5) वृहस्पति 1577917828 / 364220 = 4332.320652352973 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(6) शुक्र 1577917828 / 7022376 = 224.6985675503562 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(7) शनि 1577917828 / 146568 = 10765.77307461383 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

अब विज्ञान के अनुसार कहे हुए दिन से मिला लीजिये आपको सभी कुछ अपने आप पता चल जाएगा

The Planets in Our Solar System

Planet (or Dwarf Planet)	Distance from the Sun (Astronomical Units miles km)	Period of Revolution Around the Sun (1 planetary year)	Period of Rotation (1 planetary day)	Mass (kg)	Diameter (miles km)	Apparent size from Earth	Temperature (K Range or Average)	Number of Moons
Mercury	0.39 AU, 36 million miles 57.9 million km	87.96 Earth days	58.7 Earth days	3.3×10^{23}	3,031 miles 4,878 km	5-13 arc seconds	100-700 K mean=452 K	0
Venus	0.723 AU 67.2 million miles 108.2 million km	224.68 Earth days	243 Earth days	4.87×10^{24}	7,521 miles 12,104 km	10-64 arc seconds	726 K	0
Earth	1 AU 93 million miles 149.6 million km	365.26 days	24 hours	5.98×10^{24}	7,926 miles 12,756 km	Not Applicable	260-310 K	1
Mars	1.524 AU 141.6 million miles 227.9 million km	686.98 Earth days	24.6 Earth hours =1.026 Earth days	6.42×10^{23}	4,222 miles 6,787 km	4-25 arc seconds	150-310 K	2
Jupiter	5.203 AU 483.6 million miles 778.3 million km	11.862 Earth years	9.84 Earth hours	1.90×10^{27}	88,729 miles 142,796 km	31-48 arc seconds	120 K (cloud tops)	67 (18 named plus many smaller ones)
Saturn	9.539 AU 886.7 million miles 1,427.0 million km	29.456 Earth years	10.2 Earth hours	5.69×10^{26}	74,600 miles 120,660 km	15-21 arc seconds excluding rings	88 K	62 (30 unnamed)
Uranus	19.18 AU 1,784.0 million miles 2,871.0 million km	84.07 Earth years	17.9 Earth hours	8.68×10^{25}	32,600 miles 51,118 km	3-4 arc seconds	59 K	27 (6 unnamed)
Neptune	30.06 AU 2,794.4 million miles 4,497.1 million km	164.81 Earth years	19.1 Earth hours	1.02×10^{26}	30,200 miles 48,600 km	2.5 arc seconds	48 K	13

आपने इस चित्र में जो देख रहे है की 11.86 वर्ष, 29.46 वर्ष, उसके लिए वहा जो एक बार भ्रमण में लगाने वाला संख्या है उसे 365 से भाग कर दे आपको सभी चीजे वैसे ही मिल जाएगा जैसे आपको बताया गया है

(1) सूर्य 365.258756481481..एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(2) चण्द्रमा 27.321674162683866435 00 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(3) मंगल 686.9974939394784 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(4) बुध 87.96970228119881 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(5) वृहस्पति 4332.320652352973 / 365 = 11.86 yearsएक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(6) शुक्र 224.6985675503562 एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

(7) शनि 10765.77307461383 / 365 = 29.49 years एक चक्कर लगाने में लगाने वाले दिन-रात की संख्या और समय

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्पगणना

ब्रह्माण्डकीआयुवेदिकगणनाकेअनुसार

सूर्य के हिसाब से गणना करने पर “30 घड़ी कुछ कला” का एक सम्पूर्ण दिनरात होता है और वतर्मान समय में “24 घंटे कुछ मिनट” का एक सम्पूर्ण दिनरात होता है

प्रत्येक वर्ष जो यह थोड़ा-थोड़ा समय बढ़ता रहता है जिसके कारण 365-366 दिन का वर्ष जो होते है उसका गणना पहले करते है इसके लिए आप 365 दिन से जो ज्यादा अंक है उसको एक के बाद एक जोरते (+) अर्थात जमा करते जाय इससे आपको 365-366 दिन का ज्ञान हो जाएगा
सुर्य के एक वर्ष के सम्पूर्ण समय = 365.258756481481
365 से जो ज्यादा समय है उसको अलग से निकाल लीजिये = .258756481481
अब इन बढ़े हुए समय को 1+1+1… करते जाए इससे आपको प्रत्येक वर्ष में बढ़ता हुआ अंक प्राप्त होने लगेगा जैसे:-
प्रथम वर्ष में बढ़ा हुआ समय = .258756481481
दूसरे वर्ष में बढ़ा हुआ समय = 0.258756481481 + 0.258756481481 = 0.517512962962
तीसरे वर्ष में बढ़ा हुआ समय = 0.517512962962 + 0.258756481481 = 0.776269444443
चौथे वर्ष में बढ़ा हुआ समय = 0.776269444443 + 0.258756481481 = 1.035025925924

चौथे वर्ष में एक दिन बढ़ गया इस लिए चौथा सूर्य वर्ष 366 दिन का होगा यही प्रक्रिया हमारे अंगेजी के गणना में भी किया जाता है वेद कहता है जब तुम इसे निरंतर इसी क्रम से आगे बढ़ाते जाओगे तो तुम्हे 366 दिन चौथे वर्ष के बजाय तीसरे वर्ष में भी प्राप्त होगा पहले सूर्य वर्ष सम अर्थात even होगा इसके बाद विषम अर्थात odd शुरू हो जाएगा

366 वर्ष कब-कब आएगा इस इस अंक के द्वारा समझे:- यह कैसे होता है इसके लिए चार्ट देखे

यह 365 दिन की संख्या है	यह 365 दिन में जो कुछ अधिक काल का समय होता है उसका गणना है की प्रत्येक वर्ष कितना समय आगे बढ़ जाता है जिसके कारण वर्ष 365/366 दिन के होते है	सूर्य (Sun)
1 वर्ष	0.258756481481	यह वर्ष 365 दिन का होगा
2 वर्ष	0.517512962962	यह वर्ष 365 दिन का होगा
3 वर्ष	0.776269444443	यह वर्ष 365 दिन का होगा
4 वर्ष	1.035025925924	यह वर्ष 366 दिन का होगा
5 वर्ष	1.293782407405	यह वर्ष 365 दिन का होगा
6 वर्ष	1.552538888886	यह वर्ष 365 दिन का होगा
7 वर्ष	1.811295370367	यह वर्ष 365 दिन का होगा
8 वर्ष	2.070051851848	यह वर्ष 366 दिन का होगा
9 वर्ष	2.328808333329	यह वर्ष 365 दिन का होगा
10 वर्ष	2.587564814810	यह वर्ष 365 दिन का होगा
11 वर्ष	2.846321296291	यह वर्ष 365 दिन का होगा
12 वर्ष	3.105077777772	यह वर्ष 366 दिन का होगा
13 वर्ष	3.363834259253	यह वर्ष 365 दिन का होगा
14 वर्ष	3.622590740734	यह वर्ष 365 दिन का होगा
15 वर्ष	3.881347222215	यह वर्ष 365 दिन का होगा
16 वर्ष	4.140103703696	यह वर्ष 366 दिन का होगा
17 वर्ष	4.398860185177	यह वर्ष 365 दिन का होगा
18 वर्ष	4.657616666658	यह वर्ष 365 दिन का होगा
19 वर्ष	4.916373148139	यह वर्ष 365 दिन का होगा
20 वर्ष	5.175129629620	यह वर्ष 366 दिन का होगा
21 वर्ष	5.433886111101	यह वर्ष 365 दिन का होगा
22 वर्ष	5.692642592582	यह वर्ष 365 दिन का होगा
23 वर्ष	5.951399074063	यह वर्ष 365 दिन का होगा
24 वर्ष	6.210155555544	यह वर्ष 366 दिन का होगा
25 वर्ष	6.468912037025	यह वर्ष 365 दिन का होगा
26 वर्ष	6.727668518506	यह वर्ष 365 दिन का होगा
27 वर्ष	6.986424999987	यह वर्ष 365 दिन का होगा
28 वर्ष	7.245181481468	यह वर्ष 366 दिन का होगा
29 वर्ष	7.503937962949	यह वर्ष 365 दिन का होगा
30 वर्ष	7.762694444430	यह वर्ष 365 दिन का होगा

31 वर्ष	8.021450925911	यह वर्ष 366 दिन का होगा
32 वर्ष	8.280207407392	यह वर्ष 365 दिन का होगा
33 वर्ष	8.538963888873	यह वर्ष 365 दिन का होगा
34 वर्ष	8.797720370354	यह वर्ष 365 दिन का होगा
35 वर्ष	9.056476851835	यह वर्ष 366 दिन का होगा
36 वर्ष	9.315233333316	यह वर्ष 365 दिन का होगा
37 वर्ष	9.573989814797	यह वर्ष 365 दिन का होगा
38 वर्ष	9.832746296278	यह वर्ष 365 दिन का होगा
39 वर्ष	10.091502777759	यह वर्ष 366 दिन का होगा
40 वर्ष	10.350259259240	यह वर्ष 365 दिन का होगा
41 वर्ष	10.609015740721	यह वर्ष 365 दिन का होगा
42 वर्ष	10.867772222202	यह वर्ष 365 दिन का होगा
43 वर्ष	11.126528703683	यह वर्ष 366 दिन का होगा
44 वर्ष	11.385285185164	यह वर्ष 365 दिन का होगा
45 वर्ष	11.644041666645	यह वर्ष 365 दिन का होगा
46 वर्ष	11.902798148126	यह वर्ष 365 दिन का होगा
47 वर्ष	12.161554629607	यह वर्ष 366 दिन का होगा
48 वर्ष	12.420311111088	यह वर्ष 365 दिन का होगा
49 वर्ष	12.679067592569	यह वर्ष 365 दिन का होगा
50 वर्ष	12.937824074050	यह वर्ष 365 दिन का होगा
51 वर्ष	13.196580555531	यह वर्ष 366 दिन का होगा
52 वर्ष	13.455337037012	यह वर्ष 365 दिन का होगा
53 वर्ष	13.714093518493	यह वर्ष 365 दिन का होगा
54 वर्ष	13.972849999974	यह वर्ष 365 दिन का होगा
55 वर्ष	14.231606481455	यह वर्ष 366 दिन का होगा
56 वर्ष	14.490362962936	यह वर्ष 365 दिन का होगा
57 वर्ष	14.749119444417	यह वर्ष 365 दिन का होगा
58 वर्ष	15.007875925898	यह वर्ष 366 दिन का होगा
59 वर्ष	15.266632407379	यह वर्ष 365 दिन का होगा
60 वर्ष	15.525388888860	यह वर्ष 365 दिन का होगा

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्
कल्पगणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

वेद शास्त्र कहता है चन्द्रमा की भ्रमण गति को नक्षत्र काल कहते है जिसमे चद्रमा अपने एक सम्पूर्ण गोल भ्रमण में 27.3216741626838 से कुछ अधिक काल का समय लेता है चन्द्रमा के समूह में 28 नक्षत्र आते है जिसका नाम यह है

(1) अश्विनी (2) भरणी (3) कृत्तिका (4) रोहणी (5) मृगशिरा (6) आद्रा (7) पुनवर्सु (8) पुष्य (9) अश्लेषा (10) मधा (11) पूर्वाफाल्गुनी (12) उत्तराफाल्गुनी (13) हस्त (14) चित्रा (15) स्वाति (16) विशाखा (17) अनुराधा (18) ज्येष्ठा (19) मूल (20) पूर्वाषाढ़ा (21) उत्तराषाढ़ा (22) श्रवण (23) धनिष्ठा (24) शतभिषा (25) पूर्वाभाद्रपद (26) उत्तराभाद्रपद (27) रेवती (28) अभिजित

28 नक्षत्र में से प्रत्येक दिन एक नक्षत्र से कुछ ज्यादा समय चन्द्रमा भोग करता है दूसरे दिन अगले नक्षत्र में चले जाते है इस प्रकार प्रत्येक दिन एक एक नक्षत्र से थोड़ा ज्यादा बढ़ते जाते है चन्द्रमा 28वा नक्षत्र का भोग 2-3 महीने में करता जिसके कारण वह नक्षत्र महीना 28 दिन का होजाता है यह 28वा नक्षत्र कब-कब आता है वह समझ लीजिये

चन्द्रमा को जो एक भ्रमण का समय है उसमे से 27 दिन और कुछ अधिक समय है उस अधिक समय को अलग कर दीजिये

अब इस अलग समय को 1+1+1... करते जाए इससे क्रम में आपको महीने में कितना नक्षत्र समय बढ़ता है उसका ज्ञान प्राप्त हो जाएगा जैसे निचे बताया गया है

चन्द्रमा के एक सम्पूर्ण भ्रमण का समय = 27.3216741626838

27 में से कुछ अधिक काल को अलग करे = 0.3216741626838

इस अंक 0.3216741626838 को +1+1+.. करते जाए

0.3216741626838 + 0.3216741626838 = 0.6433483253676

0.6433483253676 + 0.3216741626838 = 0.9650224880514

0.9650224880514 + 0.3216741626838 = 1.2866966507352

प्रथम नक्षत्र महीना = 27.3216741626838

दूसरे नक्षत्र महीना = 27.6433483253676

तीसरे नक्षत्र महीना = 27.9650224880514

चौथे नक्षत्र महीना= 27. 1.2866966507352

यहाँ 1 बढ़ गया और वह एक 27 में जुड़ गया इससे यह महीना 28 का हो जाएगा

चौथे नक्षत्र महीना = 28.2866966507352 का होगा

इस प्रकार आपका नक्षत्र महीना 27-28 का आता जाता रहेगा इसका अधिक जानकारी के लिए चार्ट देखे इसके सम-विषम इस प्रकार से आएगा

4-28 (4वा महीना 28 दिन का होगा जैसे April) 22-28(22वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Oct)

7-28 (7वा महीना 28 दिन का होगा जैसे July) 25-28(25वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Jan)

10-28 (10वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Oct.) 28-28(28वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Apr)

13-28 (12वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Jan) 32-28(32वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Aug)

16-28 (16वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Apr) 35-28 (35वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Nov)

19-28 (19वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Jul) 38-28(38वा महीना 28 दिन का होगा जैसे Feb) इत्यादि....

नक्षत्र महीनों की संख्या	नक्षत्र का महीना 27 दिन से जो कुछ अधिक काल का समय होता है उसका यह गणना है प्रत्येक महीना में कितना समय आगे बढ़ जाता है जिसके कारण नक्षत्र महीना 27-28 का हो जाता है	
1 महीना	0.32167416268380	यह महीना 27 दिन का होगा
2 महीना	0.64334832536760	यह महीना 27 दिन का होगा
3 महीना	0.96502248805140	यह महीना 27 दिन का होगा
4 महीना	1.28669665073520	यह महीना 28 दिन का होगा
5 महीना	1.60837081341900	यह महीना 27 दिन का होगा
6 महीना	1.93004497610280	यह महीना 27 दिन का होगा
7 महीना	2.25171913878660	यह महीना 28 दिन का होगा
8 महीना	2.57339330147040	यह महीना 27 दिन का होगा
9 महीना	2.89506746415420	यह महीना 27 दिन का होगा
10 महीना	3.21674162683800	यह महीना 28 दिन का होगा
11 महीना	3.53841578952180	यह महीना 27 दिन का होगा
12 महीना	3.86008995220560	यह महीना 27 दिन का होगा
13 महीना	4.18176411488940	यह महीना 28 दिन का होगा
14 महीना	4.50343827757320	यह महीना 27 दिन का होगा
15 महीना	4.82511244025700	यह महीना 27 दिन का होगा
16 महीना	5.14678660294080	यह महीना 28 दिन का होगा
17 महीना	5.46846076562460	यह महीना 27 दिन का होगा
18 महीना	5.79013492830840	यह महीना 27 दिन का होगा
19 महीना	6.11180909099220	यह महीना 28 दिन का होगा
20 महीना	6.43348325367600	यह महीना 27 दिन का होगा
21 महीना	6.75515741635980	यह महीना 27 दिन का होगा
22 महीना	7.07683157904360	यह महीना 28 दिन का होगा
23 महीना	7.39850574172740	यह महीना 27 दिन का होगा
24 महीना	7.72017990441120	यह महीना 27 दिन का होगा
25 महीना	8.04185406709500	यह महीना 28 दिन का होगा
26 महीना	8.36352822977880	यह महीना 27 दिन का होगा
27 महीना	8.68520239246260	यह महीना 27 दिन का होगा
28 महीना	9.00687655514640	यह महीना 28 दिन का होगा
29 महीना	9.32855071783020	यह महीना 27 दिन का होगा
30 महीना	9.65022488051400	यह महीना 27 दिन का होगा

31 महीना	9.97189904319780	यह महीना 27 दिन का होगा
32 महीना	10.29357320588160	यह महीना 28 दिन का होगा
33 महीना	10.61524736856540	यह महीना 27 दिन का होगा
34 महीना	10.93692153124920	यह महीना 27 दिन का होगा
35 महीना	11.25859569393300	यह महीना 28 दिन का होगा
36 महीना	11.58026985661680	यह महीना 27 दिन का होगा
37 महीना	11.90194401930060	यह महीना 27 दिन का होगा
38 महीना	12.22361818198440	यह महीना 28 दिन का होगा
39 महीना	12.54529234466820	यह महीना 27 दिन का होगा
40 महीना	12.86696650735200	यह महीना 27 दिन का होगा
41 महीना	13.18864067003580	यह महीना 28 दिन का होगा
42 महीना	13.51031483271960	यह महीना 27 दिन का होगा
43 महीना	13.83198899540340	यह महीना 27 दिन का होगा
44 महीना	14.15366315808720	यह महीना 28 दिन का होगा
45 महीना	14.47533732077100	यह महीना 27 दिन का होगा
46 महीना	14.79701148345480	यह महीना 27 दिन का होगा
47 महीना	15.11868564613860	यह महीना 28 दिन का होगा
48 महीना	15.44035980882240	यह महीना 27 दिन का होगा
49 महीना	15.76203397150620	यह महीना 27 दिन का होगा
50 महीना	16.08370813419000	यह महीना 28 दिन का होगा
51 महीना	16.40538229687380	यह महीना 27 दिन का होगा
52 महीना	16.72705645955760	यह महीना 27 दिन का होगा
53 महीना	17.04873062224140	यह महीना 28 दिन का होगा
54 महीना	17.37040478492520	यह महीना 27 दिन का होगा
55 महीना	17.69207894760900	यह महीना 27 दिन का होगा
56 महीना	18.01375311029280	यह महीना 28 दिन का होगा
57 महीना	18.33542727297660	यह महीना 27 दिन का होगा
58 महीना	18.65710143566040	यह महीना 27 दिन का होगा
59 महीना	18.97877559834420	यह महीना 27 दिन का होगा
60 महीना	19.30044976102800	यह महीना 28 दिन का होगा
61 महीना	19.62212392371180	यह महीना 27 दिन का होगा

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

कल्प विस्तार वरणम्

कल्पगणना

ब्रह्माण्ड की आयु वेदिक गणना के अनुसार

सूर्य के एक सम्पूर्ण दिन में कितना समय होता है उसको समझने के लिए मन्वन्तर के सम्पूर्ण दिन से सम्पूर्ण सूर्य भ्रमण को भाग करे आपको मालुम है एक मन्वन्तर का समय 4320000 वर्ष होते है और इस 4320000 वर्ष में 1577917828 दिन होते है इतने दिनों में सूर्य मासों की संख्या 51840000 है, अधिमास जिसे आम बोलचाल में मल्लेमास या आधा महीना कहते है 1593336 होते है, तिथि क्षय 25082252 होते है यह सब आपको पिछले भाग में विस्तार से बताते आया हूँ

इसमे सम्पूर्ण दिन से सम्पूर्ण सूर्य भ्रमण को भाग करे

सम्पूर्ण दिन = 1577917828

सम्पूर्ण भ्रमण = 4320000

1577917828 / 4320000 = 365.258756481481 यह सूर्य का एक सम्पूर्ण वर्ष में लगाने वाले दिन की संख्या और समय है

365.258756481481 इस को वर्ष में आने वाले सम्पूर्ण महीनों से भाग करे सभी प्रकार के वर्ष में सिर्फ 12 महीने ही होते है

365.258756481481 / 12 = 30.4382297067901 यह एक महीने में आने वाले दिन और समय है

30.4382297067901 अब इस अंक को 30 से भाग कर दे यह 30 एक महीने की संख्या है

30.4382297067901 / 30 = 1.014607656893004

1.014607656893004 यह एक सम्पूर्ण दिन का समय है

अब इस एक दिन में बढ़े हुए समय को अलग कर दीजिये और इसे प्रत्येक दिन में जोरते (+) जाए, इस तरह यह दिन क्रम से बढ़ता जाएगा और

एक दिन का सम्पूर्ण समय = 1.014607656893004

एक दिन में जो अधिक समय है = 0.014607656893004

अब इसे क्रम से जोरते जाए जैसे:- 1+1+1+1...

प्रथम दिन में बढ़ा हुआ समय = 0.014607656893004

दूसरे दिन में बढ़ा हुआ समय = 0.014607656893004 + 0.014607656893004 =0.029215313786008

तीसरे दिन में बढ़ा हुआ समय = 0.029215313786008 + 0.014607656893004 = 0.043822970679012 इत्यादि

इस क्रम से आपको दिन में होने वाले तिथियों की समय का स्पष्ट ज्ञान हो जाएगा की कौन सी तिथि को कौन से काल में कितने समय का होता है जैसे

प्रथम दिन सम्पूर्ण समय प्रतिपदा रहेगा दूसरे दिन में जो पहले दिन का बढ़ा हुआ समय है वह दूसरे दिन के सुबह के काल में लगा रहेगा उसके बाद द्वितीया आ जाएगा पुनः तीसरे दिन भी दूसरे दिन द्वितीया का जो समय बचा हुआ था वह तृतीया वाले दिन के सुबह में लगा जाएगा इस प्रकार यह क्रम बढ़ता जाएगा जैसे:-

प्रथम दिन के सुबह से शाम तक प्रतिपदा रहेगा

दूसरे दिन के सुवह में 0.014607656893004 इतना समय प्रतिपदा का होगा बाकी के द्वितीया का

तीसरे दिन के सुवह में 0.029215313786008 इतना समय द्वितीया का होगा बाकी के तृतीया का इत्यादि...

इसको अच्छी तरह समझने के लिए चार्ट देखे

दिन की संख्या	सूर्य सम्पूर्ण दिन के समय के साथ बढ़ते क्रम संख्या में	प्रत्येक दिन बढ़ते हुए समय का क्रम संख्या में "तिथि का क्षय" होना	सुबह	शाम
1	1.0146076568930000	0	प्रतिपदा	प्रतिपदा
2	2.0292153137860000	0.0146076568930040	प्रतिपदा	द्वितीया
3	3.0438229706790000	0.0292153137860080	द्वितीया	तृतीया
4	4.0584306275720000	0.0438229706790120	तृतीया	चतुर्थी
5	5.0730382844650000	0.0584306275720160	चतुर्थी	पंचमी
6	6.0876459413580000	0.0730382844650200	पंचमी	षष्ठी
7	7.1022535982510000	0.0876459413580240	षष्ठी	सप्तमी
8	8.1168612551440000	0.1022535982510280	सप्तमी	अष्टमी
9	9.1314689120370000	0.1168612551440320	अष्टमी	नवमी
10	10.1460765689300000	0.1314689120370360	नवमी	दशमी
11	11.1606842258230000	0.1460765689300400	दशमी	एकादशी
12	12.1752918827160000	0.1606842258230440	एकादशी	द्वादशी
13	13.1898995396090000	0.1752918827160480	द्वादशी	त्रयोदशी
14	14.2045071965020000	0.1898995396090520	त्रयोदशी	चतुर्दशी
15	15.2191148533950000	0.2045071965020560	चतुर्दशी	पूर्णिमा
16	16.2337225102880000	0.2191148533950600	पूर्णिमा	प्रतिपदा
17	17.2483301671810000	0.2337225102880640	प्रतिपदा	द्वितीया
18	18.2629378240740000	0.2483301671810680	द्वितीया	तृतीया
19	19.2775454809670000	0.2629378240740720	तृतीया	चतुर्थी
20	20.2921531378600000	0.2775454809670760	चतुर्थी	पंचमी
21	21.3067607947530000	0.2921531378600800	पंचमी	षष्ठी
22	22.3213684516460000	0.3067607947530840	षष्ठी	सप्तमी
23	23.3359761085390000	0.3213684516460880	सप्तमी	अष्टमी
24	24.3505837654320000	0.3359761085390920	अष्टमी	नवमी
25	25.3651914223250000	0.3505837654320960	नवमी	दशमी
26	26.3797990792180000	0.3651914223251000	दशमी	एकादशी
27	27.3944067361110000	0.3797990792181040	एकादशी	द्वादशी
28	28.4090143930040000	0.3944067361111080	द्वादशी	त्रयोदशी
29	29.4236220498970000	0.4090143930041120	त्रयोदशी	चतुर्दशी
30	30.4382297067900000	0.4236220498971160	चतुर्दशी	अमावश्या

चार्ट में “लाल रंग वाले कॉलम” में प्रतिदिन जो समय बढ़ रहा है उसका क्रम संख्या है उसके बाद सुबह-शाम के दो कॉलम है इसका मतलब सुबह वह तिथि कितने समय रहेगा वह दर्शाया गया है उसके बाद शाम वाले कॉलम में पहली तिथि के समाप्ति के बाद जो तिथि प्रारम्भ होगी वह बताया गया है

इसी क्रम से आप निरंतर आगे बढ़ाते जाए तो आपको वह तिथि भी मिल जाएगा जो एक वर्ष में कुछ तिथिया गायब हो जाती है जैसे कभी कभी पंचमी तिथि के बा दसप्तमी आजाती है जबकि पंचमी के बाद षष्टी आणि चाहिए था जो यह षष्टीतिथि गायब हो गया इसको उस दिनका “तिथिकाक्षय” होना कहा जाता है वह ऐसा क्यों होता है ? इसको समझने के लिए वह आप निरंतर इस अंक को क्रम से बढ़ाते जाए तो आपको इसका ज्ञान भलीभाति हो जाएगा उदाहरण के लिए आप चार्ट को ध्यान से समझने का प्रयत्न करे
जिस प्रकार तिथियों के नाम का क्षय होता है उसी प्रकार महीना के अंक भी गायब हो जाता है जैसे10 तारीख के बाद 12 तारीख का आना, बीचमें 11 तारीख जो गायब होगया है वह गायब तारीख "दिनकाक्षय" होता है यह तिथियाँ शुभ कामों के लिए कतई उपयुक्त नहीं होता, यह गणित का वह महाज्ञान है जिसे विज्ञान भी नहीं समझ पा रहा है इसे विज्ञान से भी उच्च एवं स्वच्छ विचार आध्यात्म के द्वारा समझा गया है
यह दिन कैसे गायब होता है ? इसको समझने के लिए आप सम्पूर्ण दिन के समय को क्रम से बढ़ाते जाए आपको वह ज्ञान भी प्राप्त हो जाएगा इस को समझाने के लिए चार्ट में "काला वाला कॉलम" में बताया गया है

जब आप इस गणना को भली भाति समझलेंगे तो आप यह कहना प्रारम्भ करेंगे 365/366 दिन में 360 दिन ही होते है यह बात आप आत्म विश्वास के साथ किसी को भी कह सकते है और उसे प्रमाण भी कर सकते है जिसे विज्ञान भी कतई झुठला नहीं सकता

दिन की संख्या	सूर्य सम्पूर्ण दिन के समय के साथ बढ़ते क्रम संख्या में	प्रत्येक दिन क्रम संख्या में बढ़ते हुए **"दिन का क्षय"** होना	प्रत्येक दिन बढ़ते हुए समय का क्रम संख्या में **"तिथि का क्षय"** होना	सुबह	शाम	"तिथिनाम" और "तिथिदिन" का क्षय होना
1	1.0146076568930000	1.0146076568930000	0	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
2	2.0292153137860000	2.0292153137860000	0.0146076568930040	प्रतिपदा	द्वितीया	
3	3.0438229706790000	3.0438229706790000	0.0292153137860080	द्वितीया	तृतीया	
4	4.0584306275720000	4.0584306275720000	0.0438229706790120	तृतीया	चतुर्थी	
5	5.0730382844650000	5.0730382844650000	0.0584306275720160	चतुर्थी	पंचमी	
6	6.0876459413580000	6.0876459413580000	0.0730382844650200	पंचमी	षष्ठी	
7	7.1022535982510000	7.1022535982510000	0.0876459413580240	षष्ठी	सप्तमी	
8	8.1168612551440000	8.1168612551440000	0.1022535982510280	सप्तमी	अष्टमी	
9	9.1314689120370000	9.1314689120370000	0.1168612551440320	अष्टमी	नवमी	
10	10.1460765689300000	10.1460765689300000	0.1314689120370360	नवमी	दशमी	
11	11.1606842258230000	11.1606842258230000	0.1460765689300400	दशमी	एकादशी	
12	12.1752918827160000	12.1752918827160000	0.1606842258230440	एकादशी	द्वादशी	
13	13.1898995396090000	13.1898995396090000	0.1752918827160480	द्वादशी	त्रयोदशी	
14	14.2045071965020000	14.2045071965020000	0.1898995396090520	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
15	15.2191148533950000	15.2191148533950000	0.2045071965020560	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
16	16.2337225102880000	16.2337225102880000	0.2191148533950600	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
17	17.2483301671810000	17.2483301671810000	0.2337225102880640	प्रतिपदा	द्वितीया	
18	18.2629378240740000	18.2629378240740000	0.2483301671810680	द्वितीया	तृतीया	
19	19.2775454809670000	19.2775454809670000	0.2629378240740720	तृतीया	चतुर्थी	
20	20.2921531378600000	20.2921531378600000	0.2775454809670760	चतुर्थी	पंचमी	
21	21.3067607947530000	21.3067607947530000	0.2921531378600800	पंचमी	षष्ठी	
22	22.3213684516460000	22.3213684516460000	0.3067607947530840	षष्ठी	सप्तमी	
23	23.3359761085390000	23.3359761085390000	0.3213684516460880	सप्तमी	अष्टमी	
24	24.3505837654320000	24.3505837654320000	0.3359761085390920	अष्टमी	नवमी	
25	25.3651914223250000	25.3651914223250000	0.3505837654320960	नवमी	दशमी	
26	26.3797990792180000	26.3797990792180000	0.3651914223251000	दशमी	एकादशी	
27	27.3944067361110000	27.3944067361110000	0.3797990792181040	एकादशी	द्वादशी	
28	28.4090143930040000	28.4090143930040000	0.3944067361111080	द्वादशी	त्रयोदशी	
29	29.4236220498970000	29.4236220498970000	0.4090143930041120	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
30	30.4382297067900000	30.4382297067900000	0.4236220498971160	चतुदर्शी	अमावश्या	
31	31.4528373636830000	31.4528373636830000	0.4382297067901200	अमावश्या	प्रतिपदा	
32	32.4674450205760000	32.4674450205760000	0.4528373636831240	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
33	33.4820526774690000	33.4820526774690000	0.4674450205761280	प्रतिपदा	द्वितीया	
34	34.4966603343620000	34.4966603343620000	0.4820526774691320	द्वितीया	तृतीया	
35	35.5112679912550000	35.5112679912550000	0.4966603343621360	तृतीया	चतुर्थी	
36	36.5258756481480000	36.5258756481480000	0.5112679912551400	चतुर्थी	पंचमी	
37	37.5404833050410000	37.5404833050410000	0.5258756481481440	पंचमी	षष्ठी	
38	38.5550909619340000	38.5550909619340000	0.5404833050411480	षष्ठी	सप्तमी	
39	39.5696986188270000	39.5696986188270000	0.5550909619341520	सप्तमी	अष्टमी	
40	40.5843062757200000	40.5843062757200000	0.5696986188271560	अष्टमी	नवमी	
41	41.5989139326130000	41.5989139326130000	0.5843062757201600	नवमी	दशमी	
42	42.6135215895060000	42.6135215895060000	0.5989139326131640	दशमी	एकादशी	
43	43.6281292463990000	43.6281292463990000	0.6135215895061680	एकादशी	द्वादशी	
44	44.6427369032920000	44.6427369032920000	0.6281292463991720	द्वादशी	त्रयोदशी	
45	45.6573445601850000	45.6573445601850000	0.6427369032921760	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
46	46.6719522170780000	46.6719522170780000	0.6573445601851800	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
47	47.6865598739710000	47.6865598739710000	0.6719522170781840	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
48	48.7011675308640000	48.7011675308640000	0.6865598739711880	प्रतिपदा	द्वितीया	
49	49.7157751877570000	49.7157751877570000	0.7011675308641920	द्वितीया	तृतीया	
50	50.7303828446500000	50.7303828446500000	0.7157751877571960	तृतीया	चतुर्थी	
51	51.7449905015430000	51.7449905015430000	0.7303828446502000	चतुर्थी	पंचमी	
52	52.7595981584360000	52.7595981584360000	0.7449905015432040	पंचमी	षष्ठी	
53	53.7742058153290000	53.7742058153290000	0.7595981584362080	षष्ठी	सप्तमी	
54	54.7888134722220000	54.7888134722220000	0.7742058153292120	सप्तमी	अष्टमी	
55	55.8034211291150000	55.8034211291150000	0.7888134722222160	अष्टमी	नवमी	
56	56.8180287860080000	56.8180287860080000	0.8034211291152200	नवमी	दशमी	
57	57.8326364429010000	57.8326364429010000	0.8180287860082240	दशमी	एकादशी	
58	58.8472440997940000	58.8472440997940000	0.8326364429012280	एकादशी	द्वादशी	
59	59.8618517566870000	59.8618517566870000	0.8472440997942320	द्वादशी	त्रयोदशी	
60	60.8764594135800000	60.8764594135800000	0.8618517566872360	त्रयोदशी	चतुदर्शी	

61	61.8910670704730000	61.8910670704730000	0.8764594135802400	चतुदर्शी	अमावश्या	
62	62.9056747273660000	62.9056747273660000	0.8910670704732440	अमावश्या	प्रतिपदा	
63	63.9202823842590000	63.9202823842590000	0.9056747273662480	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
64	64.9348900411520000	64.9348900411520000	0.9202823842592520	प्रतिपदा	द्वितीया	
65	65.9494976980450000	65.9494976980450000	0.9348900411522560	द्वितीया	तृतीया	
66	66.9641053549380000	66.9641053549380000	0.9494976980452600	तृतीया	चतुर्थी	
67	67.9787130118310000	67.9787130118310000	0.9641053549382640	चतुर्थी	पंचमी	
68	68.9933206687240000	68.9933206687240000	0.9787130118312680	पंचमी	षष्ठी	
69	70.0079283256170000		0.9933206687242720	षष्ठी	सप्तमी	यहां तिथि गणना की क्षय हो रही है
70	71.0225359825100000	70.0079283256170000	1.0079283256172800	सप्तमी	अष्टमी	यहाँ तिथि नाम की क्षय हो रही है
71	72.0371436394030000	71.0225359825100000	1.0225359825102800	अष्टमी	नवमी	
72	73.0517512962960000	72.0371436394030000	1.0371436394032800	नवमी	दशमी	
73	74.0663589531890000	73.0517512962960000	1.0517512962962800	दशमी	एकादशी	
74	75.0809666100820000	74.0663589531890000	1.0663589531892900	एकादशी	द्वादशी	
75	76.0955742669750000	75.0809666100820000	1.0809666100822900	द्वादशी	त्रयोदशी	
76	77.1101819238680000	76.0955742669750000	1.0955742669753000	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
77	78.1247895807610000	77.1101819238680000	1.1101819238683000	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
78	79.1393972376540000	78.1247895807610000	1.1247895807613000	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
79	80.1540048945470000	79.1393972376540000	1.1393972376543100	प्रतिपदा	द्वितीया	
80	81.1686125514400000	80.1540048945470000	1.1540048945473100	द्वितीया	तृतीया	
81	82.1832202083330000	81.1686125514400000	1.1686125514403200	तृतीया	चतुर्थी	
82	83.1978278652260000	82.1832202083330000	1.1832202083333200	चतुर्थी	पंचमी	
83	84.2124355221190000	83.1978278652260000	1.1978278652263200	पंचमी	षष्ठी	
84	85.2270431790120000	84.2124355221190000	1.2124355221193300	षष्ठी	सप्तमी	
85	86.2416508359050000	85.2270431790120000	1.2270431790123300	सप्तमी	अष्टमी	
86	87.2562584927980000	86.2416508359050000	1.2416508359053400	अष्टमी	नवमी	
87	88.2708661496910000	87.2562584927980000	1.2562584927983400	नवमी	दशमी	
88	89.2854738065840000	88.2708661496910000	1.2708661496913400	दशमी	एकादशी	
89	90.3000814634770000	89.2854738065840000	1.2854738065843500	एकादशी	द्वादशी	
90	91.3146891203700000	90.3000814634770000	1.3000814634773500	द्वादशी	त्रयोदशी	
91	92.3292967772630000	91.3146891203700000	1.3146891203703600	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
92	93.3439044341560000	92.3292967772630000	1.3292967772633600	चतुदर्शी	अमावश्या	
93	94.3585120910490000	93.3439044341560000	1.3439044341563600	अमावश्या	प्रतिपदा	
94	95.3731197479420000	94.3585120910490000	1.3585120910493700	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
95	96.3877274048350000	95.3731197479420000	1.3731197479423700	प्रतिपदा	द्वितीया	
96	97.4023350617280000	96.3877274048350000	1.3877274048353800	द्वितीया	तृतीया	
97	98.4169427186210000	97.4023350617280000	1.4023350617283800	तृतीया	चतुर्थी	
98	99.4315503755140000	98.4169427186210000	1.4169427186213800	चतुर्थी	पंचमी	
99	100.4461580324070000	99.4315503755140000	1.4315503755143900	पंचमी	षष्ठी	
100	101.4607656893000000	100.4461580324070000	1.4461580324073900	षष्ठी	सप्तमी	
101	102.4753733461930000	101.4607656893000000	1.4607656893004000	सप्तमी	अष्टमी	
102	103.4899810030860000	102.4753733461930000	1.4753733461934000	अष्टमी	नवमी	
103	104.5045886599790000	103.4899810030860000	1.4899810030864000	नवमी	दशमी	
104	105.5191963168720000	104.5045886599790000	1.5045886599794100	दशमी	एकादशी	
105	106.5338039737650000	105.5191963168720000	1.5191963168724100	एकादशी	द्वादशी	
106	107.5484116306580000	106.5338039737650000	1.5338039737654200	द्वादशी	त्रयोदशी	
107	108.5630192875510000	107.5484116306580000	1.5484116306584200	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
108	109.5776269444440000	108.5630192875510000	1.5630192875514200	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
109	110.5922346013370000	109.5776269444440000	1.5776269444444300	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
110	111.6068422582300000	110.5922346013370000	1.5922346013374300	प्रतिपदा	द्वितीया	
111	112.6214499151230000	111.6068422582300000	1.6068422582304400	द्वितीया	तृतीया	
112	113.6360575720160000	112.6214499151230000	1.6214499151234400	तृतीया	चतुर्थी	
113	114.6506652289090000	113.6360575720160000	1.6360575720164400	चतुर्थी	पंचमी	
114	115.6652728858020000	114.6506652289090000	1.6506652289094500	पंचमी	षष्ठी	
115	116.6798805426950000	115.6652728858020000	1.6652728858024500	षष्ठी	सप्तमी	
116	117.6944881995880000	116.6798805426950000	1.6798805426954600	सप्तमी	अष्टमी	
117	118.7090958564810000	117.6944881995880000	1.6944881995884600	अष्टमी	नवमी	
118	119.7237035133740000	118.7090958564810000	1.7090958564814600	नवमी	दशमी	
119	120.7383111702670000	119.7237035133740000	1.7237035133744700	दशमी	एकादशी	
120	121.7529188271600000	120.7383111702670000	1.7383111702674700	एकादशी	द्वादशी	

121	122.7675264840530000	121.7529188271600000	1.7529188271604800	द्वादशी	त्रयोदशी	
122	123.7821341409460000	122.7675264840530000	1.7675264840534800	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
123	124.7967417978390000	123.7821341409460000	1.7821341409464800	चतुदर्शी	अमावश्या	
124	125.8113494547320000	124.7967417978390000	1.7967417978394900	अमावश्या	प्रतिपदा	
125	126.8259571116250000	125.8113494547320000	1.8113494547324900	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
126	127.8405647685180000	126.8259571116250000	1.8259571116255000	प्रतिपदा	द्वितीया	
127	128.8551724254110000	127.8405647685180000	1.8405647685185000	द्वितीया	तृतीया	
128	129.8697800823040000	128.8551724254110000	1.8551724254115000	तृतीया	चतुर्थी	
129	130.8843877391970000	129.8697800823040000	1.8697800823045100	चतुर्थी	पंचमी	
130	131.8989953960900000	130.8843877391970000	1.8843877391975100	पंचमी	षष्ठी	
131	132.9136030529830000	131.8989953960900000	1.8989953960905200	षष्ठी	सप्तमी	
132	133.9282107098760000	132.9136030529830000	1.9136030529835200	सप्तमी	अष्टमी	
133	134.9428183667690000	133.9282107098760000	1.9282107098765200	अष्टमी	नवमी	
134	135.9574260236620000	134.9428183667690000	1.9428183667695300	नवमी	दशमी	
135	136.9720336805550000	135.9574260236620000	1.9574260236625300	दशमी	एकादशी	
136	137.9866413374480000	136.9720336805550000	1.9720336805555400	एकादशी	द्वादशी	
137	139.0012489943410000	137.9866413374480000	1.9866413374485400	द्वादशी	त्रयोदशी	
138	140.0158566512340000		2.0012489943415400	त्रयोदशी	चतुदर्शी	यहाँ तिथीनाम/तिथिगणना दोनों का एक साथ क्षय हो रहा है
139	141.0304643081270000	139.0012489943410000	2.0158566512345500	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
140	142.0450719650200000	140.0158566512340000	2.0304643081275500	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
141	143.0596796219130000	141.0304643081270000	2.0450719650205600	प्रतिपदा	द्वितीया	
142	144.0742872788060000	142.0450719650200000	2.0596796219135600	द्वितीया	तृतीया	
143	145.0888949356990000	143.0596796219130000	2.0742872788065600	तृतीया	चतुर्थी	
144	146.1035025925920000	144.0742872788060000	2.0888949356995700	चतुर्थी	पंचमी	
145	147.1181102494850000	145.0888949356990000	2.1035025925925700	पंचमी	षष्ठी	
146	148.1327179063780000	146.1035025925920000	2.1181102494855800	षष्ठी	सप्तमी	
147	149.1473255632710000	147.1181102494850000	2.1327179063785800	सप्तमी	अष्टमी	
148	150.1619332201640000	148.1327179063780000	2.1473255632715800	अष्टमी	नवमी	
149	151.1765408770570000	149.1473255632710000	2.1619332201645900	नवमी	दशमी	
150	152.1911485339500000	150.1619332201640000	2.1765408770575900	दशमी	एकादशी	
151	153.2057561908430000	151.1765408770570000	2.1911485339506000	एकादशी	द्वादशी	
152	154.2203638477360000	152.1911485339500000	2.2057561908436000	द्वादशी	त्रयोदशी	
153	155.2349715046290000	153.2057561908430000	2.2203638477366000	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
154	156.2495791615220000	154.2203638477360000	2.2349715046296100	चतुदर्शी	अमावश्या	
155	157.2641868184150000	155.2349715046290000	2.2495791615226100	अमावश्या	प्रतिपदा	
156	158.2787944753080000	156.2495791615220000	2.2641868184156200	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
157	159.2934021322010000	157.2641868184150000	2.2787944753086200	प्रतिपदा	द्वितीया	
158	160.3080097890940000	158.2787944753080000	2.2934021322016200	द्वितीया	तृतीया	
159	161.3226174459870000	159.2934021322010000	2.3080097890946300	तृतीया	चतुर्थी	
160	162.3372251028800000	160.3080097890940000	2.3226174459876300	चतुर्थी	पंचमी	
161	163.3518327597730000	161.3226174459870000	2.3372251028806400	पंचमी	षष्ठी	
162	164.3664404166660000	162.3372251028800000	2.3518327597736400	षष्ठी	सप्तमी	
163	165.3810480735590000	163.3518327597730000	2.3664404166666400	सप्तमी	अष्टमी	
164	166.3956557304520000	164.3664404166660000	2.3810480735596500	अष्टमी	नवमी	
165	167.4102633873450000	165.3810480735590000	2.3956557304526500	नवमी	दशमी	
166	168.4248710442380000	166.3956557304520000	2.4102633873456600	दशमी	एकादशी	
167	169.4394787011310000	167.4102633873450000	2.4248710442386600	एकादशी	द्वादशी	
168	170.4540863580240000	168.4248710442380000	2.4394787011316600	द्वादशी	त्रयोदशी	
169	171.4686940149170000	169.4394787011310000	2.4540863580246700	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
170	172.4833016718100000	170.4540863580240000	2.4686940149176700	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
171	173.4979093287030000	171.4686940149170000	2.4833016718106800	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
172	174.5125169855960000	172.4833016718100000	2.4979093287036800	प्रतिपदा	द्वितीया	
173	175.5271246424890000	173.4979093287030000	2.5125169855966800	द्वितीया	तृतीया	
174	176.5417322993820000	174.5125169855960000	2.5271246424896900	तृतीया	चतुर्थी	
175	177.5563399562750000	175.5271246424890000	2.5417322993826900	चतुर्थी	पंचमी	
176	178.5709476131680000	176.5417322993820000	2.5563399562757000	पंचमी	षष्ठी	
177	179.5855552700610000	177.5563399562750000	2.5709476131687000	षष्ठी	सप्तमी	
178	180.6001629269540000	178.5709476131680000	2.5855552700617000	सप्तमी	अष्टमी	
179	181.6147705838470000	179.5855552700610000	2.6001629269547100	अष्टमी	नवमी	
180	182.6293782407400000	180.6001629269540000	2.6147705838477100	नवमी	दशमी	

181	183.6439858976330000	181.6147705838470000	2.6293782407407200	दशमी	एकादशी	
182	184.6585935545260000	182.6293782407400000	2.6439858976337200	एकादशी	द्वादशी	
183	185.6732012114190000	183.6439858976330000	2.6585935545267200	द्वादशी	त्रयोदशी	
184	186.6878088683120000	184.6585935545260000	2.6732012114197300	त्रयोदशी	चतुर्दशी	
185	187.7024165252050000	185.6732012114190000	2.6878088683127300	चतुर्दशी	अमावश्या	
186	188.7170241820980000	186.6878088683120000	2.7024165252057400	अमावश्या	प्रतिपदा	
187	189.7316318389910000	187.7024165252050000	2.7170241820987400	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
188	190.7462394958840000	188.7170241820980000	2.7316318389917400	प्रतिपदा	द्वितीया	
189	191.7608471527770000	189.7316318389910000	2.7462394958847500	द्वितीया	तृतीया	
190	192.7754548096700000	190.7462394958840000	2.7608471527777500	तृतीया	चतुर्थी	
191	193.7900624665630000	191.7608471527770000	2.7754548096707600	चतुर्थी	पंचमी	
192	194.8046701234560000	192.7754548096700000	2.7900624665637600	पंचमी	षष्ठी	
193	195.8192777803490000	193.7900624665630000	2.8046701234567600	षष्ठी	सप्तमी	
194	196.8338854372420000	194.8046701234560000	2.8192777803497700	सप्तमी	अष्टमी	
195	197.8484930941350000	195.8192777803490000	2.8338854372427700	अष्टमी	नवमी	
196	198.8631007510280000	196.8338854372420000	2.8484930941357800	नवमी	दशमी	
197	199.8777084079210000	197.8484930941350000	2.8631007510287800	दशमी	एकादशी	
198	200.8923160648140000	198.8631007510280000	2.8777084079217800	एकादशी	द्वादशी	
199	201.9069237217070000	199.8777084079210000	2.8923160648147900	द्वादशी	त्रयोदशी	
200	202.9215313786000000	200.8923160648140000	2.9069237217077900	त्रयोदशी	चतुर्दशी	
201	203.9361390354930000	201.9069237217070000	2.9215313786008000	चतुर्दशी	पूर्णिमा	
202	204.9507466923860000	202.9215313786000000	2.9361390354938000	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
203	205.9653543492790000	203.9361390354930000	2.9507466923868000	प्रतिपदा	द्वितीया	
204	206.9799620061720000	204.9507466923860000	2.9653543492798100	द्वितीया	तृतीया	
205	207.9945696630650000	205.9653543492790000	2.9799620061728100	तृतीया	चतुर्थी	
206	209.0091773199580000	206.9799620061720000	2.9945696630658200	चतुर्थी	पंचमी	
207	210.0237849768510000	207.9945696630650000	3.0091773199588200	पंचमी	षष्ठी	यहां तिथि नाम की क्षय हो रही है
208	211.0383926337440000		3.0237849768518200	षष्ठी	सप्तमी	यहां तिथि गणना की क्षय हो रही है
209	212.0530002906370000	209.0091773199580000	3.0383926337448300	सप्तमी	अष्टमी	
210	213.0676079475300000	210.0237849768510000	3.0530002906378300	अष्टमी	नवमी	
211	214.0822156044230000	211.0383926337440000	3.0676079475308400	नवमी	दशमी	
212	215.0968232613160000	212.0530002906370000	3.0822156044238400	दशमी	एकादशी	
213	216.1114309182090000	213.0676079475300000	3.0968232613168400	एकादशी	द्वादशी	
214	217.1260385751020000	214.0822156044230000	3.1114309182098500	द्वादशी	त्रयोदशी	
215	218.1406462319950000	215.0968232613160000	3.1260385751028500	त्रयोदशी	चतुर्दशी	
216	219.1552538888880000	216.1114309182090000	3.1406462319958600	चतुर्दशी	अमावश्या	
217	220.1698615457810000	217.1260385751020000	3.1552538888888600	अमावश्या	प्रतिपदा	
218	221.1844692026740000	218.1406462319950000	3.1698615457818600	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
219	222.1990768595670000	219.1552538888880000	3.1844692026748700	प्रतिपदा	द्वितीया	
220	223.2136845164600000	220.1698615457810000	3.1990768595678700	द्वितीया	तृतीया	
221	224.2282921733530000	221.1844692026740000	3.2136845164608800	तृतीया	चतुर्थी	
222	225.2428998302460000	222.1990768595670000	3.2282921733538800	चतुर्थी	पंचमी	
223	226.2575074871390000	223.2136845164600000	3.2428998302468800	पंचमी	षष्ठी	
224	227.2721151440320000	224.2282921733530000	3.2575074871398900	षष्ठी	सप्तमी	
225	228.2867228009250000	225.2428998302460000	3.2721151440328900	सप्तमी	अष्टमी	
226	229.3013304578180000	226.2575074871390000	3.2867228009259000	अष्टमी	नवमी	
227	230.3159381147110000	227.2721151440320000	3.3013304578189000	नवमी	दशमी	
228	231.3305457716040000	228.2867228009250000	3.3159381147119000	दशमी	एकादशी	
229	232.3451534284970000	229.3013304578180000	3.3305457716049100	एकादशी	द्वादशी	
230	233.3597610853900000	230.3159381147110000	3.3451534284979100	द्वादशी	त्रयोदशी	
231	234.3743687422830000	231.3305457716040000	3.3597610853909200	त्रयोदशी	चतुर्दशी	
232	235.3889763991760000	232.3451534284970000	3.3743687422839200	चतुर्दशी	पूर्णिमा	
233	236.4035840560690000	233.3597610853900000	3.3889763991769200	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
234	237.4181917129620000	234.3743687422830000	3.4035840560699300	प्रतिपदा	द्वितीया	
235	238.4327993698550000	235.3889763991760000	3.4181917129629300	द्वितीया	तृतीया	
236	239.4474070267480000	236.4035840560690000	3.4327993698559400	तृतीया	चतुर्थी	
237	240.4620146836410000	237.4181917129620000	3.4474070267489400	चतुर्थी	पंचमी	
238	241.4766223405340000	238.4327993698550000	3.4620146836419400	पंचमी	षष्ठी	
239	242.4912299974270000	239.4474070267480000	3.4766223405349500	षष्ठी	सप्तमी	
240	243.5058376543200000	240.4620146836410000	3.4912299974279500	सप्तमी	अष्टमी	

241	244.5204453112130000	241.4766223405340000	3.5058376543209600	अष्टमी	नवमी	
242	245.5350529681060000	242.4912299974270000	3.5204453112139600	नवमी	दशमी	
243	246.5496606249990000	243.5058376543200000	3.5350529681069600	दशमी	एकादशी	
244	247.5642682818920000	244.5204453112130000	3.5496606249999700	एकादशी	द्वादशी	
245	248.5788759387850000	245.5350529681060000	3.5642682818929700	द्वादशी	त्रयोदशी	
246	249.5934835956780000	246.5496606249990000	3.5788759387859800	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
247	250.6080912525710000	247.5642682818920000	3.5934835956789800	चतुदर्शी	अमावश्या	
248	251.6226989094640000	248.5788759387850000	3.6080912525719800	अमावश्या	प्रतिपदा	
249	252.6373065663570000	249.5934835956780000	3.6226989094649900	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
250	253.6519142232500000	250.6080912525710000	3.6373065663579900	प्रतिपदा	द्वितीया	
251	254.6665218801430000	251.6226989094640000	3.6519142232510000	द्वितीया	तृतीया	
252	255.6811295370360000	252.6373065663570000	3.6665218801440000	तृतीया	चतुर्थी	
253	256.6957371939290000	253.6519142232500000	3.6811295370370000	चतुर्थी	पंचमी	
254	257.7103448508220000	254.6665218801430000	3.6957371939300100	पंचमी	षष्ठी	
255	258.7249525077150000	255.6811295370360000	3.7103448508230100	षष्ठी	सप्तमी	
256	259.7395601646080000	256.6957371939290000	3.7249525077160200	सप्तमी	अष्टमी	
257	260.7541678215010000	257.7103448508220000	3.7395601646090200	अष्टमी	नवमी	
258	261.7687754783940000	258.7249525077150000	3.7541678215020200	नवमी	दशमी	
259	262.7833831352870000	259.7395601646080000	3.7687754783950300	दशमी	एकादशी	
260	263.7979907921800000	260.7541678215010000	3.7833831352880300	एकादशी	द्वादशी	
261	264.8125984490730000	261.7687754783940000	3.7979907921810400	द्वादशी	त्रयोदशी	
262	265.8272061059660000	262.7833831352870000	3.8125984490740400	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
263	266.8418137628590000	263.7979907921800000	3.8272061059670400	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
264	267.8564214197520000	264.8125984490730000	3.8418137628600500	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
265	268.8710290766450000	265.8272061059660000	3.8564214197530500	प्रतिपदा	द्वितीया	
266	269.8856367335380000	266.8418137628590000	3.8710290766460600	द्वितीया	तृतीया	
267	270.9002443904310000	267.8564214197520000	3.8856367335390600	तृतीया	चतुर्थी	
268	271.9148520473240000	268.8710290766450000	3.9002443904320600	चतुर्थी	पंचमी	
269	272.9294597042170000	269.8856367335380000	3.9148520473250700	पंचमी	षष्ठी	
270	273.9440673611100000	270.9002443904310000	3.9294597042180700	षष्ठी	सप्तमी	
271	274.9586750180030000	271.9148520473240000	3.9440673611110800	सप्तमी	अष्टमी	
272	275.9732826748960000	272.9294597042170000	3.9586750180040800	अष्टमी	नवमी	
273	276.9878903317890000	273.9440673611100000	3.9732826748970800	नवमी	दशमी	
274	278.0024979886820000	274.9586750180030000	3.9878903317900900	दशमी	एकादशी	
275	279.0171056455750000	275.9732826748960000	4.0024979886830900	एकादशी	द्वादशी	यहां तिथि नाम की क्षय हो रही है
276	280.0317133024680000	276.9878903317890000	4.0171056455761000	द्वादशी	त्रयोदशी	
277	281.0463209593610000		4.0317133024691000	त्रयोदशी	चतुदर्शी	यहां तिथि गणना की क्षय हो रही है
278	282.0609286162540000	278.0024979886820000	4.0463209593621000	चतुदर्शी	अमावश्या	
279	283.0755362731470000	279.0171056455750000	4.0609286162551100	अमावश्या	प्रतिपदा	
280	284.0901439300400000	280.0317133024680000	4.0755362731481100	प्रतिपदा	प्रतिपदा	
281	285.1047515869330000	281.0463209593610000	4.0901439300411200	प्रतिपदा	द्वितीया	
282	286.1193592438260000	282.0609286162540000	4.1047515869341200	द्वितीया	तृतीया	
283	287.1339669007190000	283.0755362731470000	4.1193592438271200	तृतीया	चतुर्थी	
284	288.1485745576120000	284.0901439300400000	4.1339669007201300	चतुर्थी	पंचमी	
285	289.1631822145050000	285.1047515869330000	4.1485745576131300	पंचमी	षष्ठी	
286	290.1777898713980000	286.1193592438260000	4.1631822145061400	षष्ठी	सप्तमी	
287	291.1923975282910000	287.1339669007190000	4.1777898713991400	सप्तमी	अष्टमी	
288	292.2070051851840000	288.1485745576120000	4.1923975282921400	अष्टमी	नवमी	
289	293.2216128420770000	289.1631822145050000	4.2070051851851500	नवमी	दशमी	
290	294.2362204989700000	290.1777898713980000	4.2216128420781500	दशमी	एकादशी	
291	295.2508281558630000	291.1923975282910000	4.2362204989711600	एकादशी	द्वादशी	
292	296.2654358127560000	292.2070051851840000	4.2508281558641600	द्वादशी	त्रयोदशी	
293	297.2800434696490000	293.2216128420770000	4.2654358127571600	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
294	298.2946511265420000	294.2362204989700000	4.2800434696501700	चतुदर्शी	पूर्णिमा	
295	299.3092587834350000	295.2508281558630000	4.2946511265431700	पूर्णिमा	प्रतिपदा	
296	300.3238664403280000	296.2654358127560000	4.3092587834361800	प्रतिपदा	द्वितीया	
297	301.3384740972210000	297.2800434696490000	4.3238664403291800	द्वितीया	तृतीया	
298	302.3530817541140000	298.2946511265420000	4.3384740972221800	तृतीया	चतुर्थी	
299	303.3676894110070000	299.3092587834350000	4.3530817541151900	चतुर्थी	पंचमी	
300	304.3822970679000000	300.3238664403280000	4.3676894110081900	पंचमी	षष्ठी	
301	305.3969047247930000	301.3384740972210000	4.3822970679012000	षष्ठी	सप्तमी	
302	306.4115123816860000	302.3530817541140000	4.3969047247942000	सप्तमी	अष्टमी	
303	307.4261200385790000	303.3676894110070000	4.4115123816872000	अष्टमी	नवमी	
304	308.4407276954720000	304.3822970679000000	4.4261200385802100	नवमी	दशमी	
305	309.4553353523650000	305.3969047247930000	4.4407276954732100	दशमी	एकादशी	

306	310.4699430092580000	306.4115123816860000	4.4553353523662200	एकादशी	द्वादशी	
307	311.4845506661510000	307.4261200385790000	4.4699430092592200	द्वादशी	त्रयोदशी	
308	312.4991583230440000	308.4407276954720000	4.4845506661522200	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
309	313.5137659799370000	309.4553353523650000	4.4991583230452300	चतुदर्शी	अमावश्या	
310	314.5283736368300000	310.4699430092580000	4.5137659799382300	अमावश्या	प्रतिपदा	
311	315.5429812937230000	311.4845506661510000	4.5283736368312400	प्रतिपदा	द्वितीया	
312	316.5575889506160000	312.4991583230440000	4.5429812937242400	द्वितीया	तृतीया	
313	317.5721966075090000	313.5137659799370000	4.5575889506172400	तृतीया	चतुर्थी	
314	318.5868042644020000	314.5283736368300000	4.5721966075102500	चतुर्थी	पंचमी	
315	319.6014119212950000	315.5429812937230000	4.5868042644032500	पंचमी	षष्ठी	
316	320.6160195781880000	316.5575889506160000	4.6014119212962600	षष्ठी	सप्तमी	
317	321.6306272350810000	317.5721966075090000	4.6160195781892600	सप्तमी	अष्टमी	
318	322.6452348919740000	318.5868042644020000	4.6306272350822600	अष्टमी	नवमी	
319	323.6598425488670000	319.6014119212950000	4.6452348919752700	नवमी	दशमी	
320	324.6744502057600000	320.6160195781880000	4.6598425488682700	दशमी	एकादशी	
321	325.6890578626530000	321.6306272350810000	4.6744502057612800	एकादशी	द्वादशी	
322	326.7036655195460000	322.6452348919740000	4.6890578626542800	द्वादशी	त्रयोदशी	
323	327.7182731764390000	323.6598425488670000	4.7036655195472800	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
324	328.7328808333320000	324.6744502057600000	4.7182731764402900	चतुदर्शी	अमावश्या	
325	329.7474884902250000	325.6890578626530000	4.7328808333332900	अमावश्या	प्रतिपदा	
326	330.7620961471180000	326.7036655195460000	4.7474884902263000	प्रतिपदा	द्वितीया	
327	331.7767038040110000	327.7182731764390000	4.7620961471193000	द्वितीया	तृतीया	
328	332.7913114609040000	328.7328808333320000	4.7767038040123000	तृतीया	चतुर्थी	
329	333.8059191177970000	329.7474884902250000	4.7913114609053100	चतुर्थी	पंचमी	
330	334.8205267746900000	330.7620961471180000	4.8059191177983100	पंचमी	षष्ठी	
331	335.8351344315830000	331.7767038040110000	4.8205267746913200	षष्ठी	सप्तमी	
332	336.8497420884760000	332.7913114609040000	4.8351344315843200	सप्तमी	अष्टमी	
333	337.8643497453690000	333.8059191177970000	4.8497420884773200	अष्टमी	नवमी	
334	338.8789574022620000	334.8205267746900000	4.8643497453703300	नवमी	दशमी	
335	339.8935650591550000	335.8351344315830000	4.8789574022633300	दशमी	एकादशी	
336	340.9081727160480000	336.8497420884760000	4.8935650591563400	एकादशी	द्वादशी	
337	341.9227803729410000	337.8643497453690000	4.9081727160493400	द्वादशी	त्रयोदशी	
338	342.9373880298340000	338.8789574022620000	4.9227803729423400	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
339	343.9519956867270000	339.8935650591550000	4.9373880298353500	चतुदर्शी	अमावश्या	
340	344.9666033436200000	340.9081727160480000	4.9519956867283500	अमावश्या	प्रतिपदा	
341	345.9812110005130000	341.9227803729410000	4.9666033436213600	प्रतिपदा	द्वितीया	
342	346.9958186574060000	342.9373880298340000	4.9812110005143600	द्वितीया	तृतीया	
343	348.0104263142990000	343.9519956867270000	4.9958186574073600	तृतीया	चतुर्थी	
344	349.0250339711920000	344.9666033436200000	5.0104263143003700	चतुर्थी	पंचमी	यहां तिथि नाम की क्षय हो रही है
345	350.0396416280850000	345.9812110005130000	5.0250339711933700	पंचमी	षष्ठी	
346	351.0542492849780000	346.9958186574060000	5.0396416280863800	षष्ठी	सप्तमी	
347	352.0688569418710000		5.0542492849793800	सप्तमी	अष्टमी	यहां तिथि गणना की क्षय हो रही है
348	353.0834645987640000	348.0104263142990000	5.0688569418723800	अष्टमी	नवमी	
349	354.0980722556570000	349.0250339711920000	5.0834645987653900	नवमी	दशमी	
350	355.1126799125500000	350.0396416280850000	5.0980722556583900	दशमी	एकादशी	
351	356.1272875694430000	351.0542492849780000	5.1126799125514000	एकादशी	द्वादशी	
352	357.1418952263360000	352.0688569418710000	5.1272875694444000	द्वादशी	त्रयोदशी	
353	358.1565028832290000	353.0834645987640000	5.1418952263374000	त्रयोदशी	चतुदर्शी	
354	359.1711105401220000	354.0980722556570000	5.1565028832304100	चतुदर्शी	अमावश्या	
355	360.1857181970150000	355.1126799125500000	5.1711105401234100	अमावश्या	प्रतिपदा	
356	361.2003258539080000	356.1272875694430000	5.1857181970164200	प्रतिपदा	द्वितीया	
357	362.2149335108010000	357.1418952263360000	5.2003258539094200	द्वितीया	तृतीया	
358	363.2295411676940000	358.1565028832290000	5.2149335108024200	तृतीया	चतुर्थी	
359	364.2441488245870000	359.1711105401220000	5.2295411676954300	चतुर्थी	पंचमी	
360	365.2587564814800000	360.1857181970150000	5.2441488245884300	पंचमी	षष्ठी	
361		361.2003258539080000	5.2587564814814300	षष्ठी	सप्तमी	
362		362.2149335108010000	5.2733641383744300	सप्तमी	अष्टमी	
363		363.2295411676940000	5.2879717952674300	अष्टमी	नवमी	
364		364.2441488245870000	5.3025794521604300	नवमी	दशमी	
365		365.2587564814800000	5.3171871090534300	दशमी	एकादशी	
1	1.2733641383730000	1.2733641383730000	5.3317947659464300	एकादशी	द्वादशी	
2	2.2879717952660000	2.2879717952660000	5.3464024228394300	द्वादशी	त्रयोदशी	

अब जो हमारे पास एक दिन का सम्पूर्ण समय है उसको क्रम में जोरते (+) जाए जैसे

एक सम्पूर्ण दिन का समय = 1.014607656893004

दूसरे दिन का समय = 1.014607656893004 + 1.014607656893004 = 2.029215313786008

तीसरे दिन का समय = 2.029215313786008 + 1.014607656893004 = 3.043822970679012 इत्यादि...

इस क्रम के द्वारा 365 दिन तक जाएंगे तो यहाँ आपको बीच-बीच में एक-एक अंक अदृश्य होता जाएगा जिसके कारण वर्ष का 365.258756481481 का जो साल होता है वह आपको 360 दिन में ही पूरा हो जाएगा और इस क्रम में करते समय जो 5 अंक अदृश्य हो गए है वही "दिनकाक्षय" कहलाती है जो अदृश्य वाले अंक है प्रत्येक वर्ष में अलग अलग संख्या में आते जाते रहते है अगर आप प्रथम वर्ष से गणना प्रारम्भ करते हो तो वह अदृश्य तिथि/अंक की संख्या 70-138-207-275-344 एवं 69-138-208-277-347 होगा

इस प्रकार प्रत्येक दिन को क्रम से बढ़ते हुए जाएंगे तो 1000वे दिन में वही प्रथम संख्या पुनः आ जाता है उसी प्रकार प्रत्येक ग्रह भी 1000वे भ्रमण करने पर पुनः वैसे ही अवस्था को प्राप्त कर लेता है जैसे पहले दिन वाले अवस्था थी..

अब आप 1000 को 365.258756481481 से भाग दे

1000 / 365.258756481481 = 2.737785151635923

0.014607656893004 समय जो सूर्य दिन में बढ़ाना शुरू होता है वह 1000 दिन के बाद उसी अंक पर स्थापित हो जाता है जिस अंक को वह प्रथम दिन चला था जब आपने 1000 से 365 को भाग किया इस बीच में वह 2.73 वर्ष तक का समय आया जिसमे15 दिन का क्षय हो गया है इस लिए पौने 3 वर्ष के बाद 15 दिन का महीना होता है जिसे "मल्लेमास" कहते है यही है "कल्प की गाथा"

इसका और भी विस्तार है जो एक-एक पल में घटित होने वाली घटना से आप परिचित हो सकते है यह छोटी सी कल्प ज्ञान के बारे में आपको विज्ञान के आधार के द्वारा परिचित कराया है इसके अलावा भी बहुत से ऐसे संख्या है जिसको विज्ञान को मालुम ही नहीं अगर उसे वर्णन करूंगा तो लोग उस पर विस्वास ही नहीं करेंगे या करेंगे तो भविष्य में होने वाले घटना को समझ कर डर जाएंगे

इसके बाद भूगोल का सक्षिप्त में वर्णन कर रहा हूँ वह भी प्रमाण के द्वारा इसमे कुछ तो विज्ञान को मालूम है और कुछ नहीं

पुराण का परिचय

पुराण सब शास्त्रों के पहले से ही विधमान है ब्रह्मा जी सबसे पहले पुराणों का ही समरन किया था पुराण धर्म अर्थ और काम के साधक एवं परम पवित्र है इसकी रचना 100 cr करोड़ श्लोकों के साथ हुई है समय के अनुसार इतने बड़े पुराणों का श्रवण और पठन असमभव देखकर स्वयं भगवान् उसका सक्षेप करने के लिए प्रत्येक द्वापर युग में व्यास रूप से अवतार लेते है और 4 Lac लाख श्लोकों के साथ 18 पुराणों में बाँट देते है पुराणों का यह सक्षिप्त संकरण ही इस भूमण्डल में प्रकाशित होते है देवलोक में आज भी 100 cr करोड़ श्लोकों के विस्तृत के साथ पुराण मौजूद है।

पृथ्वी पर जो 4 लाख श्लोकों के साथ यह पुराण उपस्थित है क्रमानुसार इस तरह से है
(1) ब्रह्मा पुराण (2) पदम् पुराण (3) विष्णु पुराण (4) शिव पुराण (5) भागवत पुराण (6) नारद पुराण (7) मारकंडे पुराण (8) अग्नी पुराण (9) भविष्य पुराण (10) वैवत पुराण (11) नरसिम्भा पुराण (12) वराह पुराण (13) स्कन्द पुराण (14) वावन पुराण (15) कूर्म पुराण (16) मत्स्य पुराण (17) गरुड़ पुराण (18) ब्रह्मांड पुराण

वेद-पुराण का मतलब
वेद is Operator of the “पुराण”.
पुराण is details of the space “ब्रहमाण्ड”.
उपनिषाद is dictionary of the “पुराण”.

पुराण में जादुई शव्दों के द्वारा सम्पुर्ण चीजे बताई गई है इसमे विज्ञान, समाज, विद्या, धर्म, संपूर्ण ब्रहमाण्ड है

पुराण के पाँच भेद है

१) सृष्टी अर्थात space का निर्मान
२) सृष्टी अर्थात space से होने वाली सृष्टी अर्थात sapce का निर्मान
३) सृष्टी अर्थात Space का वंशजों का वर्णन
४) कौन कौन से ग्रह किस किस के पश्चात हुय का वर्णन
५) इन ग्रहों में होने वाले चरित्र का वर्णन

पुराण के चार पाद है

१) प्रक्रिया (Think)
२) अनुसंग (Generate)
३) उत्पोद्घात (Operate)
४) उपसहार (Destroy)

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

यह जगत विष्णु जी से उतप्पन हुआ है, उन्ही में स्थित है, वे ही इसकी स्थिती और लय के कर्ता है तथा यह जगत भी वे ही है, यह विष्णु जी कहाँ से आये ? उनकी उतपत्ती कैसे हुआ? यह कोई नहीं जनता, उन्होंने ही इस मायामय संसार की रचना सिर्फ लीलामात्र के लिए की है

विष्णु जी की वास्तविक रूप नाग है, यह नाग ही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर है जैसे एक ही व्यक्ति के तीन प्रतिबिम्भ,जैसे एक किसान खेत को बनाता और बीज डालता है उसके बाद खेत की रक्षा करता है उसके बाद जब फसल पक जाती है उसे काट लेते है

इस प्रक्रिया में एक किसान पहले जब खेत बनाया और बीज बोया उस समय वह ब्रह्मा का कार्य कर रहा था, जब वह खेतों के फसल की रक्षा में लगा था उस समय वह विष्णु के रूप में था जब वह फसल काटा उस समय वह शिव रूप था इसी तरह यह ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों एक ही है

ब्रह्मा विष्णु और शिव जिनका काम उतपति, स्थिती और संहार के कारण है, उन विकार रहित शुद्ध, अविनासी, परमात्मा, सर्वदा एकरस, सर्ववीजायी, भगवान विष्णु को नमस्कार है, जो एक होकर भी नाना रूप वाले स्थूल सूक्ष्म, अव्यक्त एवं व्यक्त रूप में सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड से लेकर पृथ्वी तक अपने आप को स्थित कर रखे है, जो परे से भी परे है, परमश्रेष्ठ, अन्तरात्माओं में स्थित परमात्मा, रूप, वर्ण, नाम, विशेषण आदि से रहित है, जिसमे जन्म, वृद्धि, परिमाण, क्षय और नाश इन छह: विकारो का सर्व्था अभाव है, वे सर्वत्र है, और समस्त विश्व बसा हुआ है इसलिए विद्वानों ने नित्य, अजन्मा, अक्षय, अव्यय, एकरस, परब्रह्मा कहा है |

1. ब्रह्मा जी के रूप में सृष्टी की रचना करते है
2. विष्णु जी के रूप में सृष्टी का पालनकर्ता है
3. शंकर जी के रूप में समस्त चीजो का संहार कर देते है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

भूमण्डल विस्तार वरणम्

इस भूमण्डल का वृतांत सक्षेप में बताता हूँ जम्बू Bermuda, प्लक्ष Hawaii, शाल्मली Maui, कुश Mplokai, क्रोञ्च Oahu, शाक Kauai और पुष्कर Niihau ये सातों द्वीप ब्रह्मा जी द्वारा सबसे पहले स्थापित किया गया जो एक के बाद एक तिरक्षे होते चले गए है ये सभी द्वीप चारो ओर से खारे पानी इक्षुरस, मदिरा, धृत, दही, दुग्ध, और मीठे जल के सात समुद्रों से घिरा है सातों द्वीपों के भीतर वर्तमान हजारों छोटे छोटे द्वीप है जिनसे यह जगत व्याप्त है इसी सात द्वीप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का भेद है

जम्बूद्वीप रूपी पृथ्वी चारों तरफ से चौड़ाई और लम्बाई में सब ओर से बराबर एक लाख योजन की है इस लाख योजन वाले द्वीप में बहुत से जनपद, सिद्द्व चारणों से व्याप्त है जम्बू द्वीप के मेरु के चारों तरफ नौ वर्ष व्याप्त है जिसका नाम भारतवर्ष, किम्पुरुषवर्ष (Europe), हरिवर्ष (Africa), रम्यकवर्ष (South America), हिरमन्यवर्ष (North America), करूदेश (Denmark), दक्षिण में एक महान शैलपर्वत है जिसे मालयवानवर्ष (Australia) कहते है, धनु देश or भद्राश्व (South Atlantic) और संस्थ: देश or केतुमाल देश (North Atlantic) है

इन सभी वर्षों के मध्य में विष्कम्भ नामक पर्वत है जिसकी लम्बाई और चौड़ाई 9 हजार योजन है इस विष्कम्भ नामक पर्वत पर इलावृत देश है

इलावृत देश पृथ्वी के मध्य में स्थित है जिसे आजकल Bermuda के नाम से जाना जाता है जिसका आकार आधे चन्द्रमा के सामान है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

भूमण्डल विस्तार वरणम्

इस इलावर्त वर्ष Bermuda के ठीक आगे के मध्य center के बीचो बीच में सुवर्णमय मेरुपर्वत है जिसे आज के वर्तमान समय में शायद "मेगनेटिक फिल्ड" का नाम दिया हुआ है यह मेरु पर्वत प्रचंड सूर्य के सामान, बिना धुएं के अग्नी रूपी स्वच्छ सीसे के सामान खड़ा है

जैसे आप पानी को गरम करते हो तो उससे भाप उतपन्न होती है वह भाप 700 डिग्री सेल्सियस से निचे गर्म होने पर हमें दिखाई देता है परन्तु अगर 700 डिग्री सेल्सियस के ऊपर जब हम इस भाप को और तपाते है तो यह दिखाई देना बंद हो जाता है अगर इसे कांच के जार में देखेंगे तो वह हमें नहीं दिखाई देता तब अगर हम किसी भी रोशनी को उसके आर पार करना चाहे तो रोशनी उस भाप को आर पार नहीं कर पाती है इसी तरह से यह मेरु पर्वत है जिसमे से कोई भी रोशनी आर-पार नहीं कर सकता चाहे वह सूर्य या चन्द्रमा की ही क्यों ना किरणे हो यही इस पर्वत का होने के प्रमाण है इसके पास कोई भी जीव नहीं जा सकता

इस "मेगनेटिक फिल्ड" की उचाई 84000 हजार योजन है और निचे की ओर यह 16000 हजार योजन पृथ्वी में घुसा हुआ है इसकी पृथ्वी के अंदर से लेकर अंतरिक्ष तक की लम्बाई एक लाख योजन है इस "मेगनेटिक फिल्ड" रूपी मेरु पर्वत के शिखर पर जा कर इसका विस्तार 32000 हजार योजन का हो गया है और 96 योजन की दूरी में चारों तरफ से फैला है यह मेरु के शिखर का प्रमाण है जहां देवताओं और गणों का निवास स्थान है

जैसे शराब के प्याले होती है उसी तरह यह "मेगनेटिक फिल्ड" निचे पेंदी में चौड़ा इसके बाद गरदन की तरह पतला ऊपर के तरफ और ज्यादा चौड़ा "मेगनेटिक फिल्ड" रूपी मेरु पर्वत पृथ्वी रूपी कलम के कर्णिका के रूप में स्थित है

पृथ्वी का मध्य

पृथ्वी का मध्य जमबू द्वीप जिसे आजकल बरमूडा कहते है,
जो आधे चन्द्रमा के अकार में है

मेरु पर्वत जिसके ऊपर भगवान निवास करते है

सूर्य के प्रचंड अग्नि के सामान और स्वच्छ सीसे के भाती खड़ा है

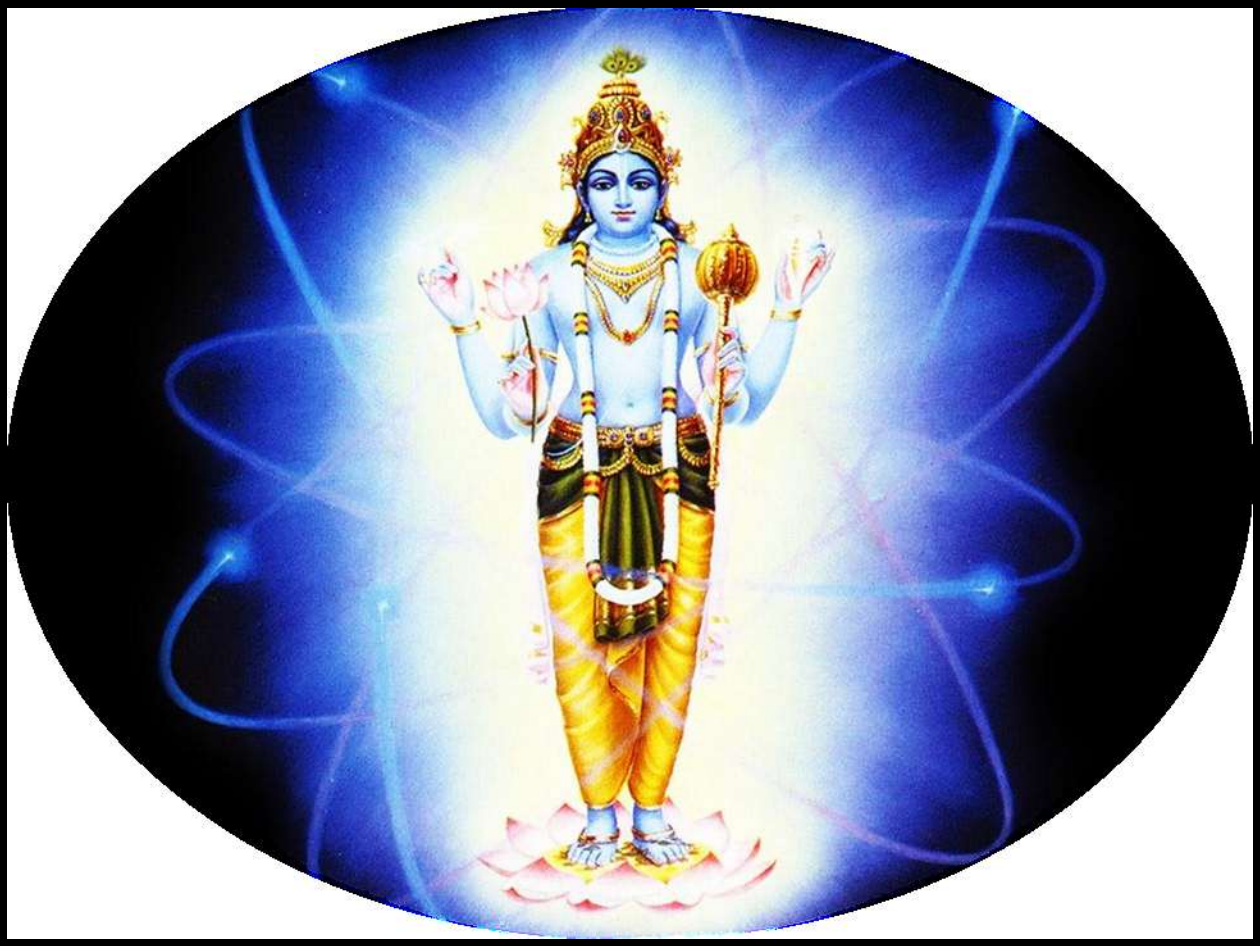

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

भूमण्डल विस्तार वरणम्

समुन्द्र के निचे के मेरु पर्वत "मेगनेटिक फिल्ड" की स्थिति का संक्षेप वर्णन

मेरु "मेगनेटिक फिल्ड" की लम्बाई और चौड़ाई एक लाख योजन है इसमे हिमवान, हेमकूट, निषध, मेरु, नील, श्वेत और श्रींगवान ये सात पृथ्वी के मर्यादा पर्वत है और इन सब पर्वतो की दूरी नौ-नौ हजार योजन की है ये सभी दो हजार योजन लम्बे और दो हजार योजन चौड़े है तथा इसकी उचाई 1 लाख से 80 हजार योजन की है इन सब पर्वतों में मेरु "मेगनेटिक फिल्ड" सबके मध्य center में स्थित है ये सभी पर्वत समुन्द्र के भीतर स्थित है

पृथ्वी के निचे मूल तहलटी में मेरु रूपी "मेगनेटिक फिल्ड" जो 16000 हजार योजन तक धसा हुआ है 48 हजार योजन में गोलाई से चारो तरफ फैला हुआ है इसके चारो ओर चार पर्वत है ये चारों पर्वत मानों मेरु को धारण करने के लिय ईश्वर के द्वारा बनाई किलियाँ है इन चारों किलीयां रूपी पर्वत के पूर्व में मंदराचल, दक्षिण में गंधमादन, पश्छिम में विपुल और उत्तर में सुपाश्वा है ये सभी चारों पर्वत दस दस हजार योजन ऊँचे है इन पर्वतों के शिखर पर गयारह ग्यारह सौ योजन ऊंची कदम्ब, जम्बू, पीपल और वट के वृक्ष ध्वजा के समान खड़े है

जो अत्यंत समृद्धशाली देवताओं, दैत्यों और अप्सराओं उनकी सुरक्षा में सनंद्ध रहते है इसके बाद मेरु के मर्यादा रूपी 8 पर्वत आठों दिशाओं में खड़ी है इसके बाद चौदह दूसरे पर्वत है जो सात द्वीप वाली पृथ्वी को अचल रखने में सहायक है अनुमानत: उन पर्वतों की तिरछी होती हुई ऊपर तक की चौड़ाई दस हजार योजन होगी इस पर जगह जगह हरिताल, मैनशिला आदि धातुय तथा सुवर्ण एवं मणिमण्डित गुफाय है जो इसकी शोभा बढ़ाती है सिद्धों के अनेक भवन तथा क्रीड़ा स्थान से संपन्न होने के कारण इसकी प्रभा सदा दीप्त होती रहती है

मेरु गिरी के पूर्व भाग में मंदराचल, दक्षिण में गंधमादन, पच्छिम में विपुल और उत्तरभाग में सुपाश्वा पर्वत है उन पर्वतों पर चार महान वृक्ष है इन चारों वृक्षों में जम्बू वृक्ष के कारण इलावृत वर्ष को जम्बू द्वीप के नाम से भी जाना जाता है और इस कारण सम्पूर्ण पृथ्वी को जम्बू द्वीप भी कहते है इलावृत प्रदेश Bermuda सभी ओर से 34 हजार योजन प्रमाण से बताया गया है

हस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

भूमण्डल विस्तार वरणम्

यह मेरु यंत्र है जिसके द्वारा आप पृथ्वी की सरचनाय समझ सकते है

रहस्यमय पुराण प्रारंभ भाग

भूमण्डल विस्तार वरणम्

समुंद्र के ऊपरी भाग का संक्षेप में वर्णन

हिमबानपर्वत पर भारतवर्ष, हेमकुटपर्वत पर किम्पुरुषवर्ष (Europe), नषेधपर्वत पर हरिवर्ष (Africa), नीलपर्वत पर रम्यकवर्ष (South America), श्वेतपर्वत पर हिरमन्यवर्ष (North America), श्रींगवानपर्वत पर करूदेश (Denmark), निषध के दक्षिण में एक महान शैलपर्वत है जिसे मालयवानवर्ष (Australia) कहते है, उत्तर दिशा में धनु देश or भद्राश्व (North Atlantic) और दक्षिण दिशा में संस्थ: देश or केतुमाल देश (South Atlantic) है उत्तरकुरु वर्ष रूपी डेनमार्क भारत वर्ष के समान है

इलावृत वर्ष Bermuda के उत्तर Denmark में जो श्रिंगवान नामक पर्वत है इसके तीन शंकु रूपी पर्वत है जो उत्तर से दक्षिण के तरफ फैले हुय है इसमे बीच वाला श्रृंगी पर्वत “विषुवत रेखा” का विभाजन करता है इन देशों की प्रत्येक की चौड़ाई दो हजार योजन है तथा लम्बाई में पहले की अपेकक्षा पिछला क्रम से दसमांश से कुछ अधिक कम है चौड़ाई और उचाई तो सभी का समान है

क्रम से नील, श्वेत और श्रिंगवान नाम के तीन पर्वत है जो रम्यक रूपी North America, हिरमण्य रूपी South America और कुरु रूपी Denmark नाम के वर्षों को सीमा बांधता है ये पूर्व से पच्छिम तक खारे पानी के समुद्र तक फैला हुआ है

इलावृत देश Bermuda के दक्षिण में एक के बाद एक निषध, हेमकूट और हिमालय नाम के तीन पर्वत है ये पर्वत भी पूर्व से पच्छिम तक फैले हुय है ये दस दस हजार योजन ऊँचे है इनमे क्रम से हरिवर्ष रूपी Africa, किम्पुरुष रूपी Europe और भारत वर्ष रूपी Asia के सीमाओं को विभाग करता है

गन्धमादन और माल्यवान नाम के दो पर्वत है इनकी चौड़ाई दो दो हजार योजन की है ये भद्राश्व रूपी North Pole और केतुमाल रूपी South Pole नामक दो वर्षों की सीमा निश्चित करते है